साप्ताहिक समय माया

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

पंजीयन क्रमांक RNINDPM\HIN\16730/12/1/97/TC

प्रधान संपादक-अजमेरा एस.पी.कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Tel : 91-731-2102725
Cell : 91-9827330697
Fax : 91-731-2531630
Websites : www.samaymaya.com
www.geocities.com/ corruption2india/ eduIndore.html
www.geocities.com/corruption2india/ corruptindia.html
E-mail : mwc@indiatimes.com
: linkdage@hotmail.com,
: linkadage@indiatimes.com

वर्ष 6 अंक 34 इन्दौर, जबलपुर सोमवार, 22 से 28 नवंबर 2004 पृष्ठ 8 मूल्य रु.2/-

2 संपादकीय
✦क़ाम की जीत भ्रष्टाचार की हार

3 ✦सारे हरामखोर एक ही थाली के चट्टे-बट्टे
✦नई दुनिया में वर्ष विजयगीय के विरुद्ध क्यों नहीं छापा

4 ✦इंदौर ए. के व्ही.एन. का भ्रष्टाचार
✦कंप्यूटर सेवा और सामान देने वाले लुटेरे की फौज

5 ✦औद्योगिक स्वा. एवं सुरक्षा भ्रष्ट्राचारियों की फौज
✦म.प्र. में हो रही जानवरों की खालों की तस्करी

7 ✦प्रदूषण नियंत्रण मंडल को बंद किया जाना चाहिए
✦जया का बदला शंकराचार्य की गिरफ्तारी

8 ✦सी.ए.जी. भी करता है आंकड़ों की बाजीगरी
✦प्रमोद महाजन ही है सबसे बड़ा कुकर्मी

इटालियन सोनिया का षड्यंत्र शंकराचार्य की गिरफ्तारी

हिन्दू धर्म में आस्था खत्म कर इसाइयत फैलाने की चाल

सोनिया के सत्ता में आते ही इटली में फूटे पटाखों की कहानी है, शंकराचार्य की गिरफ्तारी और बदनाम करने का षड्यंत्र। शंकराचार्य की गिरफ्तारी और हत्या के षड्यंत्र में फंसाकर सोनिया ने जो जया के कंधों पर दांव ख़ेला ताकि पूरे विश्व में बढ़ते हिन्दुत्व के प्रभाव को समाप्त कर आस्था को डिगा दिया जाए, ताकि लोग ईसाइयत के प्रति आकर्षित होकर इसाई धर्म ग्रहण कर लें। सोनिया के षड्यंत्र की चाल में अगले शिकारों की संभावना में सांई बाबा श्रीश्री रविशंकर जो आर्ट आफ लिविगोंस पूरी दुनिया में हिन्दुत्व का परचम फहरा चुके हैं। के बाद जैनियों के विद्यासागर जी , तरुण सागर मुनि भी हो सकते हैं।

शंकराचार्य की गिरफ्तारी ये पोप के उस वक्तव्य का हिस्सा है जो पहली सहस्त्राब्दी इटली में दूसरी यूरोप में और तीसरी पूरे विश्व में इसाइयत होगी के षड्यंत्र का हिस्सा ही हैं। इटली के पोप की एजेन्ट सोनिया की वफादारी दिखाने के लिए जया का षड्यंत्र है, परन्तु पूरा खेल और शतरंज कीबिसात के मोहरें इटली से खिसकाए जा रहे हैं।

कांची काम कोटि के शंकराचार्य जो पूरे देश में अति पूज्यनीय हैं, उन पर हत्या का आरोप लगाकर जयललिता द्वारा सींखचों के पीछे पहुंचाने की रणनीति में जयललिता के कंधों पर रखकर सोनिया अपनी शक्ति प्रदर्शन और ईसाइयत फैलाने केलिए जिन शतरंज के मोहरो को खिसका रही है ये पोप के उस षड्यंत्र का हिस्सा है जिसमें सन 2002 में उसने घोषणा की थी कि तीसरी शताब्दी परे एशिया पर इसाइयत का कब्जा होगा।

हत्या के आरोपी हैं वो धर्मगुरु कैसे हो सकते हैं। कितने गंदे व कमजोर हैं, हिन्दुओं के भगवान और धर्म गुरु। इससे भोली-भाली जनता विशेषकर

(शेष पेज 6 पर)

मनमोहन सरकार की उपलब्धियां

कांग्रेस लौटी अपनी ब्लेक मार्केटिंग वाली औकात पर या मई, 04 से सत्तासीन मनमोहन सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि रही बीस प्रतिशत पेट्रोल-डीजल और गैस में दस प्रतिशत बढ़ोत्री मात्र 6 माह में स्वाभाविक है महंगाई बढ़ी, फिर कांग्रेसियों की कमाई का हथकंडा है। हर माह गैस की कमी उत्पन्न कर ब्लेक मार्केटिंग करवा कर कमाई करना, अब जनता को गैस ब्लेक में रु. 300 से 325 का सिलेंडर खरीदना पड़ रहा है। जनता भी इसकी शौकीन है।कोई माल कम कीमत पर साधारण तरीके से खरीदा तो क्या खरीदा कुछ मजा नहीं आया।

उसे तो मजा तब ही आता है, जब वह ब्लेक में खरीदकर चाहे फिर मिट्टी तेल, पेट्रोल, गैस, शकर से लेकर कारों तक को ब्लेक में खरीदने की आदि हो चुकी है। अब जब दीपावली और ईदका त्योहार था तो गैस नहीं थी, क्योकिं इस मणिशंकर अय्यर ने गैस के दाम सतत बढ़ाते रहने की घोषणा कर दी, जिससे हर महीने 5 रु. की बढ़ोत्री का संकेत दे दिया अर्थात संग्रहित सिलेंड़रों पर रु. 5 की अधिक बचत होगी, तो स्वाभाविक है, जितनी विलंब से गैस दी जाएगी उतना फायदा। यही कारण है कि गैस वितरकों ग्राहकों को परेशान करने और कमाई का मार्ग खोज लिया।

इराक में अमेरिकी आतंक और जनसंहार

विश्व में चारों तरफ नपुंसकता का माहौल, क्यों सब चुप है?

क्या इराक वियतनाम से भी कमजोर सिद्ध होगा

अमेरिका में बुश की जीत क्या हुई,उसने इराकी शहर फल्लुजा पर कहर बरपाना शुरू कर दिया। भीषण नरसंहार में औरतों और दूधमुंहों को भी नहीं बख्शा जा रहा, इसका सबसे दु:खद पहलू यह है कि विश्व की विश्वव्यापी संस्था संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान भी चुप्पी साध रखी है।

दूसरी ओर विश्व का मुस्लिम लड़ाकू समुदाय होने के बाद भी उसका खून भी जम गया है। भारत की कांग्रेसी संयुक्त दलों की सरकार तो वैसे भी अमेरिकी कठपुतली रही है। इन भिखारियों को तो डाल दो चुपचाप देश की जनता क़ो नोचकर हड्डियों विदेशी चूसते बैठेंगे। रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी जैसे देश भी शांत बैठे हैं। आश्चर्य है पूरा अमेरिकी गुंडों में उलझा हुआ है।

संकर प्रजाति अमेरिकी की जनता ने ओसमा के जाली टेप के सामने घुटने क्या टिकाए, बुश छुट्टे सांड की तरह आतंक बरपा कर उसने इराकी फल्लुजा शहर में भीषण तबाही मचाना शुरू कर दी।

इराकियों के ठोस और गुरिल्ला प्रतिरोध के अभाव में सैकड़ों बेगुनाह इराकियों जिसमें हजारों महिलाओं और बच्चों को भी सरेआम मौत के घाट उतारा जा रहा है। पर चारों तरफ चुप्पी है। कोई भी आश्चर्य तो इस बात का है कि फ्रांस, चीन, जर्मनी, रूस जैसे देशों में भी इस व्यापकजन अमेरिका जनसंहार के विरुद्ध प्रतिक्रिया कहीं देखने को नहीं मिल रही है। धन्य है सबने अमेरिकी गुंडों के सामने घुटने टेक दिए।

अमरसिंग की चाल का शिकार रिलायंस समूह

अनिल को राज्य सभा में भेजकर अनिल के हिस्से की संपत्ति का प्रयोग किया जाएगा मुलायम सिंग को प्रधानमंत्री बनाने में

रिलायंस समूह का टूटना जनता के हित में अच्छा ही रहेगा। नि:संदेह निवेशकों को घाटा होगा, रिलायंस समूह के टूटने से जनता के साथ रिलायंस जैसे जालसाज समूह से की जाने वाली जालसाजियों में कमी आ जाएगी। इसके विपरीत यह भी संभव है कि जिस अमरसिंग की चाल का शिकार अनिल अंबानी होने जा रहे हैं वह अमर सिंग अनिल की कंपनियों में सेंध लगाकर संचालक मंडल में घुस कर जालसाजियों को बढ़ा दे। अमर सिंग मुल्ला मुलायम सिंग जैसे ब्यौड़े को प्रधानमंत्री बनाने में अनिल के हिस्से की संपत्ति को उपयोग कर ले और मुकेश को पटियों पर लाकर खड़ा कर दे।

यह निश्चित है कि अगले मार्च का चिट्ठा दोनों भाइयों का अलग-अलग ही बनेगा।

उत्तर प्रदेश की राजनीति का चाणक्य अमर सिंग माना जाता है। नि:संदेह वह चाणक्य नहीं वरन पूरा बनिया है उसका उ-श्य पंडित चाणक्य की तरह पवित्र तो कदापि नहीं। वह मुल्ला मुलायम सिंग का भी उपयोग ही कर रहा है। वैसे भी ब्यौड़ा मुलायम सिंग अमरसिंग की बिसात का मोहरा ही है। कर्ज में डूबे अमिताभ को गांधी खानदान से अलग कर सहार का सहारा दिलवा कर मुलायम की सभा में अमिताभ को नचवा दिया।

अनिल और जया बच्चन को गांधी खानदान के विरुद्ध मुंह चलवा कर बची-खुची कसर पूरी कर दी जो मुलायम सिंग को बार-बार पटकनी दे रहे थे।

अनिल अंबानी को राज्य सभा में भेजकर रिलायंस समूह जो जालसाजियों के प्रबंधन का व्यवसाय जगत का गुरु था को अपने कब्जे में ले लिया। अब रिलायंस समूह टूटेगा। अनिल के हिस्से की संपत्ति का खुलकर अमर सिग उपयोग करेगा और अपनी शतरंज की बिसात का वजीर रूपी मुल्ला मुलायम का प्रधानमंत्री बनवा कर वो राजनीति की धारा मोड़ने की फिराक में है, जिसे संघ के रहते वो कामयाब नहीं कर पाएगा। पर हां रिलायंस अनिल वाली संपत्ति वाला उपोयग कर कम से कम गांधी खानदान को तो अमरसिंग पलटा ही देगा। वैसे जया बच्चन वे मुंह से आग उगलवाकर उसने सोनिया और उसके चूजों को उनकी औकात तो दिखा ही दी।

रिलायंस समूह के टूटने का सबसे ज्यादा फायदा जनता और कुल मिलाकर देश को होगा। ये वही शतिर धूर्त हैं जो देश के सबसे बड़े बेईमान सरकारों को सर्वोच्च न्यायालय और प्रशासन को मुट्ठी में रखकर चलते ते। जिसकी चाहे सरकारें बनवाते थे, जिसको चाहे गिराते थे, इनके बाप का सपना, दुनिया का माल हो अपना, इनके टूटते ही टूट कर बिखरने लगेगा। इनका गुजराती बाप जनता के धन को रिलायंस की विज्ञापन से ऊंचे-ऊंचे ख्वाब दिखाकर लूटना था। कभी रिलायंस इंडस्ट्री, कभी रिलायस पेट्रोलियम, कभी टीओसीडी कभी एफसीडी के ख्वाब दिखाकर कभी रु. 500 में बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को मोबाइल बेचकर बाद में बिलिंग में बेईमानी कर के इनके टूट जाने से कम से कम बेईमानी कम होगी। लूटने की शक्ति कमजोर होगी।

रिलायंस का नेफ्था, हेक्जीन, जो खुले में इंडियन ऑइल भारत पेट्रोलियम और हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के पेट्रोल पंपों में मिलाकर जनता को ठगा जाता है कभी आएगी।

फिर फ्रूड पेट्रोलियम के कुएं

(शेष पेज 6 पर)

सम्पादकीय

काम की जीत और भ्रष्टाचार की हार

भाजपा का खिसकता वोट बैंक कैलाश के भ्रष्टाचार के कारण

इंदौर में उमा शशि की जीत 21520 वोटों से ही हो पाई। यदि साढ़े बाइस हजार मत कांग्रेस को मिलते तो भाजपा कहां होती। जनता ने काम को अवश्य सराहा परन्तु कैलाश विजयवर्गीय के भ्रष्टाचार को सिरे से नकारा है। जीत का मतलब तो स्वयं भाजपाई दिग्गज भी समझ रहे हैं। यदि संघ का सहयोग नहीं मिलता होता तो भाजपा कहां होती यह मतदाता और जीते हुए उम्मीदवार भी समझ रहे हैं। सारे होश फाख्ता हो चुके हैं। सीमेंट की पक्की सड़कों ने अगर जीत पक्की कर दी तो लूट और भ्रष्टाचार ने जीत का खोखलापन और किनारा दिखा दिया। भाजपा को नई दुनिया में और अन्य समाचार पत्रों में छपे भ्रष्टाचार को सिरे से तो नहीं नकारा जा सकता। भ्रष्टाचार तो भाजपा के कार्यकाल में भी सिर चढ़कर बोले। अन्यथा पैसे का सही सदुपयोग भाजपा को उम्मीद से ज्यादा लाखों वोट से जिताता।

जनता समझने लगी है ये बात हर पार्टी और नेता को समझ आने लगी है। इंदौर में उसने भाजपा को नहीं उसके कार्य को जिताया, इससे भाजपाई ये न मान लें कि उनके भ्रष्टाचार को जनता ने वोट दिया है। उसने निकम्मे और काम करने वाले शैतानों में से शैतान को कार्य के लिए चुना है। इससे शैतान ये मान बैठे हैं कि उनकी शैतानियत की जीत हुई है। यहां शैतानियत की नहीं उनके अंदर बैठे कार्य करने वाले इंसान को वोट दिया है।

पूरे प्रदेश में अगर भाजपा लोकसभा विधानसभा और स्थानीय निकाय चुनावों में जीत रही है तो मात्र उसे कार्य करने और संवारने का मौका दिया गया है न कि उसे लूटने, भ्रष्टाचार करने और कुकर्मों को करने की छूट दी जा रही है। यही कारण था कि धार में सीताराम शर्मा जैसे ऐसे निर्दलीय को जिताया जो हर किसी के दुख में शामिल होता था। वहां लाखों खर्च करने वाले कांग्रेसियों और भाजपाइयों को धूल चटा दी गई। सीताराम शर्मा ने न तो एक रुपया झंडा बैनर पर खर्च किया। उसके साथियों द्वारा दिए गए माइक को ही ठेले पर लादकर स्वयं ठेला खींचकर प्रचार करता हुआ घूमता रहा। जब निर्वाचन अधिकारी ने पूछा कि आपने कितना खर्च किया तो उसका जवाब था कि दादा म्हारा पास थो कांई जो ऊं. खर्च करतो। जबकि इसके पूर्व में वो दो बार भाजपा के पार्षद रह चुके थे।

भाजपा के संबंध में ये स्पष्ट हो गया है कि चूंकि राज्य में सत्ता भाजपा की थी। प्रशासन कांग्रेसियों की लूट वसूली और बदतमीजियों से त्रस्त था। इसलिए उसने खुलकर भाजपा का साथ दिया। खुल कर अवैध मतदान भी हुआ। उच्च स्तर पर भाजपा ने जानबूझकर ऐसे कांग्रेसी उम्मीदवार खड़े करवाए, ताकि उन्हें जीत न मिल सके। ऐसी तिकड़मों और अवैध मतदान के कारण जीतने के बाद भी जीत की खुशियां कितनी ठोस होंगी उसका अंदाजा तो ठीस तरीकों से स्वयं भाजपा ही लगा सकती है। पर ठीक है अगर अवैध तरीके से जीतकर भी यदि आप समुचित रूप से जनता की भलाई के कार्य करें। जनता भ्रष्टाचार को आटे में नमक की तरह स्वीकारने में नहीं हिचकती परन्तु नमक में आटा डाला जाए तो फिर किस हद तक और कैसे सहन किया जाएगा।

जनता ने कार्य को दिल से सराहा है पुनः 5 वर्ष का मौका मिला है, फिजाओं में बहार लाने का कुछ कर दिखाने का।

वाणिज्य कर उपायुक्तों और सहा. आयुक्तों की लूट चरम पर

भ्रष्ट पालीवाल, वर्मा, तिवारी, जोशी, मरावी, शर्मा, और अरोरा जुटे हैं लूट में, कड़वा सच देख ब्योड़े चपरासी को पत्रकारों से उलझाया

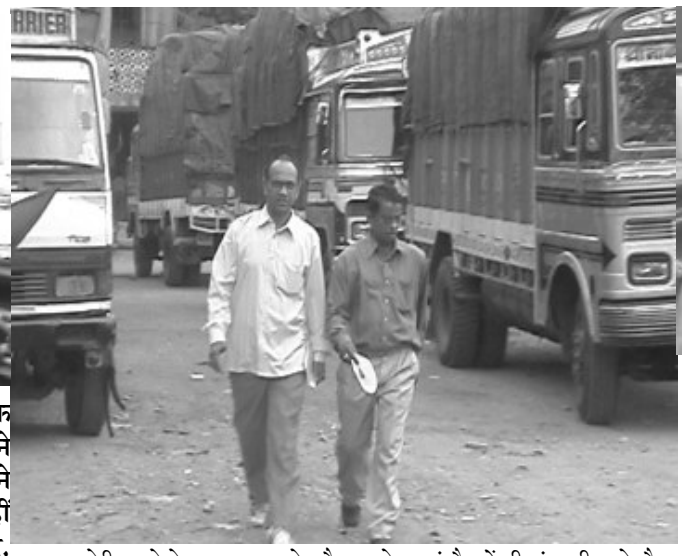

इंदौर की व्यावसायिक राजधानी में व्यापारियों को लूटने परेशान करने और वसूली करने केलिए गुंडे, मवाली ही नहीं शासन की पुलिस वाणिज्य कर, आयकर के गुंडे भी पीछे नहीं रहते। म.प्र. शासन के वाणिज्य कर में बैठे भ्रष्ट शूकरों में उपायुक्त, सुन्दर वर्मा, पालीवाल, बघेल इन तीनों के साथ इनके भ्रष्ट चेले में वर्मा के मरावी और शर्मा, पालीवाल का तिवारी और श्रीवास्तव, बघेल का जोशी और अरोरा ने ट्रकों को पकड़कर अनाप-शनाप वसूली की। तिवारी ने तो इंदौर में वर्षों गुजारे हैं। इन श्वानों की नोंच-खसोट से शासन को पिछले कुछ वर्षों में अरबों रु. का चंदन लग चुका है। इन हरामखोरों पर लोकायुक्त के छापे पड़े तो नामी बेनामी बैंक खातों, चल-अचल संपत्तियों और ऐश्वर्य पूर्ण जीवन शैली से करोड़ों रु. पकड़े जा सकते हैं। इनके अगर मोबाइल और टेलीफोन टेप किये जाएं तो कई बड़े राजों और वाणिज्यकर में चल रही लूट का पर्दाफाश हो सकता है। इन समाचारों के छपने से इनके भ्रष्ट अधिकारी अपनी नीचतापूर्ण हरकतों पर उतरने लगे हैं। कभी पत्रकारों को घुसने नहीं देते चेतक चेंबर में तो कभी ब्यौड़े चपरासी दीपक बेंजामिन से हाथापाई करवाते हैं।

इंदौर। व्यावसायिक राजधानी में प्रदेश के वाणिज्य कर विभाग के अय्याश भ्रष्ट लुटेरों की भी राजधानी है। वाणिज्य कर में अधिकांश अय्याश भ्रष्ट लुटेरे वर्षों से कुंडली मारे बैठे हैं। दोनों हाथों से इस नगर के व्यापारियों को नए-नए तरीकों से अपनी भ्रष्ट चालों का शिकार बनाते हैं। व्यापारियों की मजबूरी ये है कि वो अगर सारे कानूनों का ालन करें तो भी कैसे? क्योंकि ये ही भ्रष्ट उन्हें अपनी वसूली के लिए भ्रष्टाचार करने कर चोरी करने के नए-नए रास्ते और कानून की खामियों का सदुपयोग करने के भी तरीके सुझाते हैं। मार्जिन में से अपना हिस्सा डकार लेते हैं।

सबसे बड़ी विडंबना इनके भ्रष्टाचार में ये भी है कि ये लूटते हैं तो अपने ऊपर पहुंचाते हैं। अर्थात सहायक आयुक्त लुटेगा तो उपायुक्त को देगा। उपायुक्त को मिलेगा तो ही आयुक्त को मिलेगा फिर वही भ्रष्ट आयुक्त अपने सचिव और मंत्री को देगा। जब मंत्री को मिलेगा तो मुख्यमंत्री भ्रष्ट बाबूलाल गौर को मिलेगा। तब ही वह इनके कुकर्मों को ढांक सकेगा और इन भ्रष्ट नागों को कुंडली माकर जमे रहने का मौका देगा। इसीलिए उपायुक्त एस.एल. वर्मा और जी.एस. बघेल जैसे भ्रष्ट शूकर यहां वर्षों से जमे हैं। बड़े-बड़े कांडों को अंजाम दे रहे हैं।

दीपावली के एक माह पूर्व से शुरू हुई ट्रकों की पकड़ा धकड़ी में भी विभाग के अधिकारियों ने लगभग रु. 50 करोड़ के पूरे प्रदेश भर में लेन-देन के समाचार हैं। लगभग हजार से ज्यादा ट्रकों से लेन-देन इंदौर में ही किया गया, जिसने तीन सौ ज्यादा ट्रकों को पकड़ कर अफीम गोदाम वाले मैदान में खड़ा किया जाता था, जिसमें होती थी बादाम, काजू, छुआरा, छोटी कीमती मशीनें, कल पुर्जे, इलेक्ट्रानिक्स का सामान और अन्य करोड़ों रुपए की कीमती सामग्री और बिल होते थे बारदाने या अत्यधिक कम कीमत के सामान के बिल, बस इस बीच ये सामान उतरवाकर जांच करने के बाद भी कुल टैक्स के आधे से कम का लेन-देन कर 10 से 25 प्रतिशत टैक्स किसी दूसरे सामान का बताकर छोड़ दिया जाता था। भ्रष्ट आर.सी. पालीवाल जिसके चेलों में महा शातिर है तिवारी जो वर्षों से पदोन्नति लेकर इंदौर में ही कुंडली मारे बैठा है। लगभग रु. 50 लाख से ज्यादा की अवैध संपत्ति का मालिक है। ये दिन में तो यहां-वहां घूमकर समय पूरा करता है और फिर 5 बजे के बाद इसके लेन-देन और अपने अन्य सहकर्मी के 7-8 बजे तक अवैध कार्यों का सिलसिला चलता रहता है, जिसकी पुष्टि अनेकों बार इसके कार्यालय से की गई। इसकी भी अवैध संपत्ति की जांच की जाए तो काफी चौंकाने वाली जानकारियां मिल सकती हैं।

महाभ्रष्ट उपायुक्त एस.एल. वर्मा जिसके अनेकों पेट्रोल पंप लगभग 20 दुकानें जिसमें वर्मा का पैसा लगा है। कई वर्षों से कुंडली मारे बैठा है। हमारे समाचार पत्रों की इन जानकारियों को छापने के बाद इसके अंतर्गत कार्यरत सहायक आयुक्त मरावी और एच.पी. शर्मा जिनके पास इंदौर के क्षेत्रों के साथ पीथमपुर का औद्योगिक क्षेत्र भी है और अवैध वसूली का गढ़ भी, ने चिढ़कर अपने ब्यौड़े चपरासी दीपक बेंजामिन से शाम 4.30 बजे 10 नवंबर को भिड़वा दिया। वो हाथापाई पर उतरा स्वाभाविक था श्री अजमेरा को अपने बचाव में उससे मारापीटी हुई, जिसमें मोबाइल गिर गया। चूंकि वह तरंग था, जिसमें सिम नहीं लगती। उस मोबाइल को एस.एल. वर्माने अपने पास रखा। जब एस.एल. वर्मा को बोला गयाकि इसकी एफ.आई.आर. में आपक नाम भी आएगा क्योंकि लूट का माल आपके पास है तब इस भ्रष्ट शूकर ने इसे वापिस चेकत चेंबर के मिश्रा को दिया जो उसने 23 नवंबर को लौटाया। समय माया की खोजबीन पूर्ण इनके भ्रष्टाचारों को छपने से ये भ्रष्ट शूकरों की फौज कितनी बौखलाई हुई है ये इस घटना से मालूम पड़ जाता है।

वर्तमान में कम्प्यूटर आपरेटरों के रूप में आई युवा महिला कर्मियों के जो कि अस्थाई पदों पर कार्य कर रही है। इस विभाग के अधिकारियों की दया पर निर्भर करती है। स्वाभाविक है उनका तबियत से दिल फेंक रंगीन मिजाज के अधिकारी शोषण कर रहे हैं। बदले में उन पर अवैध वसूली का धन लुटाया जाता है। वैसे इस विभाग में कार्यरत स्थायी खूबसूरत युवा महिलाओं के साथ भी अधिकारियों के संबंध हैं, जो अचानक किसी कमरे पर घुसने में उनके हावभावों से परिलक्षित होते हैं, जिनके बारे में विभाग के ही कर्मचारी चटकारे लेकर बात करते रहते हैं। अंत में ये निष्कर्ष भी दे देते हैं पत्रकार जी ''मियं बीवी राजी तो क्या करेगा काजी''

अगले अंकों में पढ़िये अन्य जानकारियां वाणिज्यकर विभाग के अधिकारियों के भ्रष्टाचार की।

(पेज 7 का शेष) प्रदूषण नियंत्रण.....

दिग्गी दानव के बाद गौर भी इसके लूटने और लुटाने के खेल के सामने नपुसंक सिद्ध ही रहे हैं। इसीलिए इन भ्रष्टों को नियति ने अपना खेल दिखा दिया। शायद मिश्रा को भी नियति इसकी बदतमीजियों के लिए कोई बड़ा उपहार देने की तैयारी में हैं। इसलिए अभी इस श्वान की हर चाल कामयाब हो रही है। और जनता, जनता के कांग्रेसी भाजपाई बड़े-बड़े दावे ठोंकने और ढींगे हांकने वाले इसके सामने बौने पड़ रहे हैं।

इसके स्थानांतरण के संबंध में नवनियुक्त प्रदूषण मंडल के सचिव शुक्ला से फोन पर बात की गई तो वह शूकर भी कार्यालयीन प्रक्रिया में उलझाने के षड्यंत्र रचने लगा। उल्टा ही हमसे पूछने लगा कि आप कौन होते हैं उसका स्थानांतरण के संबंध में पूछने वाले, ज्यादा है तो शिकायत भेज दो कार्यवाही करेंगे। इस अध्यक्ष बी.एस. दुबे, सचिव डी. शुक्ला, तीसरे ये मक्कार धूर्त मिश्रा तीनों ब्राह्मण शायद इंदौर के साथ पूरे प्रदेश को लूटते हुए पूर्णत: प्रदूषण में बर्बाद करके ही चैन लेंगे।

श्री शिवकृपा साख सहकारिता मर्या.

47, पटेल नगर, (मेघदूत टेलीफोन एक्सचेंज के पास,) इंदौर

सहकारिता सप्ताह की हार्दिक बधाइयां

शिवाजीराव काले (एड.) अध्यक्ष — श्रीमती मीना नखरिया उपाध्यक्ष — विरेन्द्र साहू उपाध्यक्ष

संचालक मंडल-गोकुल नखरिया, सावन अनुसै, रामस्वरूप कुशवाह (अतुल टैलर) अवधनारायण राय, अशोक गौरे एवं कविता कुंजीर

श्री छत्रपति शिवाजी सहकारी साख मर्या. इंदौर

मुख्यालय- छत्रपति सदन छत्रपति चौक, 201, तिलक पथ, इंदौर फोन-2430689, 2528285

शुभकामनाएं

सांपत्तिक स्थिति 31.10.2003	रुपये लाखों में
1. सदस्य संख्या	5491
2. अधिकृत भाग भांडवल	25.00
3. विक्रीत भाग भांडवल	173.26
4. अमानतें	2324.20
5. रक्षित एवं अन्य कोष	555.76
6. अन्य देनदारियां	218.22
7. विनियोजन	1703.48
8. सदस्यों को ऋण	1245.44
9. कार्यशील पूंजी	3471.44

पदाधिकारीगण- श्री तु.सी. आमणापुरकर-अध्यक्ष, श्री भाईदास व सूर्यवंशी-उपाध्यक्ष, श्रीमती उषादेवी रोकले-उपाध्यक्ष

संचालकगण- श्री अशोक तु.आमणापुरकर, श्री मिलिंदर दिघे, श्री प्रभाकरराव वा. चौखंडे, श्री जयसिंह सं. खुटाल, सौ सुरेखा है. बावले, श्री सुरेश रा. चोंडके, श्री वामनराव ह. जगताप, श्री दशरथ ल. भगत,

प्रतिनिधि- श्री दिलीप श. शितोले, श्री शरदचंद्र कृ. निंबालकर, श्री गोविन्दराव चं. शेळवे

श्रीहरि साख सहकारिता मर्यादित, इंदौर

7, सुन्दर नगर एक्सटेंशन, सुखलिया इंदौर (म.प्र.)

फोन-5031440

सहकारिता सप्ताह की हार्दिक बधाइयां

श्री जगदीश चौकसे

अध्यक्ष-श्री हरि साख सहकारिता मर्या.

जनता गृह निर्माण सह. स्था. मर्या.

संस्थापक-श्रीहरि पब्लिक स्कूल

बिना सहकार नहीं उद्धार

नई दुनिया ने 5 वर्ष विजयवर्गीय के विरुद्ध क्यों नहीं छापा

तब तो अपना फायदा लेने में लगे थे, भाजपा ने तो काम भी किया, कांग्रेसी तो केवल डकारते हैं

निगम के चुनाव के समय ही क्यों सारे भ्रष्टाचार नई दुनिया और दूसरे उछालने में लगे हैं। निःसंदेह कैलाश विजयवर्गीय ने उसके पट्ठों ने पैसा डकारा। इस बात से सहमत हैं, परन्तु जब डकार रहे थे तब क्यों नहीं छाप रहे थे? क्योंकि तब तो विज्ञापन और दूसरे वैध-अवैध संपत्तियों के करों को बचा रहे थे और अन्य फायदे ले रहे थे। इसलिए छाप कर इन सबसे हाथ धो लेते। तब सबको सांप सूंघ गयाथा। चुप्पी मारे बैठे थे।

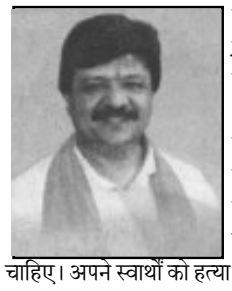

निःसंदेह प्रेस को जनता के विरुद्ध होने वाले प्रशासनिक या निजी भ्रष्टाचार छाप कर जनता को सही राह दिखानी चाहिए। अपने स्वार्थों को हत्या कर परन्तु तत्काल ताकि भ्रष्टाचार या जनता के विरुद्ध होने वाले कृत्य को रोका जा सके।

क्या वास्तविकता में पूरे देश का मीडिया ऐसा करता है कदापि नहीं सबसे पहले वो अपने फायदे देखता है व्यक्तिगत लाभ-हानि का आंकलन कर ही वो मैदान में उतारता है। प्रेस लाइन में कफन बांधकर ही जनता की लड़ाई प्रशासन शासन नेतों, अपराधियों और कुकर्मियों के विरुद्ध करनी पड़ती है। ये दुनिया जानती है, परन्तु मीडिया न केवल इंदौर प्रदेश देश और दुनिया का सर्वश्रेष्ठ भ्रष्ट है न केवल भ्रष्ट वरन दुनिया भर में फैले भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार भी है।

अपने मीडिया पावर के मीडिया वाले कब कैसा दुरुपयोग कर कब कौनसा फायदा लेंगे ये तो ऊपर वाला भी नहीं जान सकता। यही कारण है कि जब तक फायदे मिलते रहते हैं न केवल मालिक बल्कि उसके पत्रकार भी लिफाफा संस्कृति केशौकीन होते हैं। यही कारण है कि बड़े-बड़े समाचार पत्रों में पत्रकारों का वेतन रु. 2-5 या रु. 10 हजार से ज्यादा नहीं होता, परन्तु उन पत्रकारों के पास लाखों की संपत्ति और प्रति माह के खर्चे वेतन से 10 गुने तक ज्यादा हो सकते हैं। इसीलिए जब तक माल मिलता रहे फिर तो कैलाश विजयवर्गीय हो, दिग्विजय सिंह हो, जिलाधीश, डॉ. शरद पंडित, उपअधीक्षक रानावत (यातायात) कोईबी हो, फिर वो कितना भी भ्रष्टाचार करे, जनता मरे, बीमार पड़े, इन हरामकोर मीडिया वालों को कोई फर्क नहीं पड़ता। कैलाश विजयवर्गीय ने खुले में पत्रकारों को झूठन चाटने वाले श्वान भी बोला पर झूठन चाटने वाले श्वानों का अंर्तमन सोता रहा। जबकि किसने जनता को नहीं लटा या लूटता है। चाहे वो मंत्री, महापौर, जिलाधीश, आयुक्त कोई भी हो जब तक झूठन मिलती रहती है ये चूसते बैठे रहते हैं। निःसंदेह इस नगर का वरिष्ठ और श्रेष्ठ पत्रकार होने का दंभ नई दुनिया ही भरती है तो सारी बातें उस पर सर्वप्रथम लागू होती है।

फिर दूसरों की कालर देखने से पहले अपना चरित्र और प्रवृत्ति को भी स्वयं देख लिया जाना चाहिए। जिस इंदौरी जनता की खून पसीने की बर्बाद हो रही थी उस वक्त तो अपनी जेब की लंबाई नाप रहे थे कि कहीं चोटी न पड़ जाए। फिर 40 वर्ष क्या कियाकेवल जेबें लंबी करने, जमीनों की खरीद-फरोख्त, हड़पने और धन इकट्ठा करने लगे कांग्रेसी लुटेरों के साथ यदि कैलाश विजयवर्गीय और भाजपा ने न जनता के धन का रु. 100 खर्च किया तो 60 का काम भी सामने है। जबकि 16 वर्ष पहले स्व. राजीव गांधी ने स्वयं स्वीकार किया था कि रु. का 15 पै. ही अंतिम स्तर पर पहुंच रहा है। कम से कम भाजपा तो 60 प्रतिशत काम करती है जो सामने दिखता है।

फिर केन्द्र में कांग्रेस है जो अपनी पुरानी औकात जमाखोरी, काला बाजारी परमिट वाले कुकर्मों पर लौट आई है। मात्र 6 माह में 20 प्रतिशत पेट्रोल की कीमतें बढ़ा दी। यदि ये हरामखोर शूकरों की फौज 2 साल सत्ता में केन्द्र में बैठे रहे तो पेट्रोल रु. 50 बिकेगा और गैस सिलेंडर रु. 400 बूढ़े गिद्धों उन पर भी नजरें इनायत करो। केवल अपने घोंसलों में ही जनता का भी शासन का भी वैध-अवैध तरीके से नर्सरी की रु. 21/-की कलम से 50,000 में बेचकर अपने ही विशाल प्रशाल मत बनवाओ। पृथ्वी की यात्रा अंतिम चरण में है। अहिंसावादी अप्रत्यक्ष नोच-खसोट बंद कर अपनी आत्मा से विशुद्ध जनता के कल्याण की भी बात करो। मीडिया किसी की बपौती नहीं।

सारे हरामखोर एक ही थाली के चट्टे-बट्टे

केरामं. मुनियप्पा ने कहा म.प्र. की सड़कें बहुत बढ़िया

28-10-2004 को केन्द्रीय राज्य मंत्री सड़क परिवहन के एच. मुनियप्पा ने प्रेस क्लब में शाम 5 बजे म.प्र. की सड़कों को अच्छा बताकर सिद्ध कर दिया कि सहा. यंत्री व्यास कार्यपालन यंत्री के.सी. जैन से लेकर प्रधान सचिव और कैलाश विजयवर्गीय मंत्र लोक निर्माण म.प्र. तक सारे हरामखोर महाभ्रष्ट एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं, परन्तु जब श्री अजमेरा ने यह सवाल उठाया कि जब अरबों रुपए सड़कों पर खर्च किए जा रहे हैं तो सड़कों में बीओटी का नासूर जनता के सीने पर क्यों? दूसरा रा.रा.क्र. 59अ जो राजमार्ग के नियमानुसार 8 मी. चौड़ा होना चाहिए, मात्र 3 मीटर चौड़ा क्यों? और तीसरा 24 घंटे में एक बार लगना चाहिए टोल एक वाहन पर, तो इस कांग्रेसी मंत्री के पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं था। इंदौर प्रेस क्लब के जोशी ने इन प्रश्नों को जनता के हित में उत्तर मांगने की तो दूर उल्टे ही अजमेरा से ही प्रश्न किया कि आप क्लब के सदस्य नहीं हैं। आपको प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं है। ये है भांडों की फौज जिसे बस चंदे से और अपनी व्यक्तिगत कमाई से मतलब है। जनता से तो कदापि नहीं। जनता खुद समझ सकती है कि आगरा-बाम्बे राष्ट्रीय राजमार्ग की हालत क्या है?

इंदौर क़ी सड़कों की हालत क्या है। एक आम इंदौरी आसानी से बता सकता है, परन्तु दैनिक समाचार पत्रों के भांडों के सामने केन्द्रीय राज्य सड़क परिवहन मंत्री ने खुले में 28-10-04 को प्रेस क्लब में दैनिक समाचार पत्रों के पत्रकारों को बड़े शान से तमाचा जमाते हुए कह दिया कि नहीं सड़कें बहुत बढ़िया हैं। म.प्र. ने बहुत अच्छा काम किया है तो किसी भी भांड ने प्रतिरोध करने या ये पूछने की जरूरत नहीं की आप ये कैसे कह रहे हैं जबकि इंदौर के बीच से गुजरने वाले ए.बी. रोड के बारे में सारे दैनिक समाचार पत्रों ने फोटो के साथ धूल उड़ाते और गड्डों में हिचकोले खाते वाहनों को छाप चुके थे।

28-10-04 को शाम 5 बजे इंदौर प्रेस क्लब के मूर्धन्य समझे जाने वाले पत्रकारों की असलियत उस समय प्रगट हो गई कि क्यों ये भांडों की फौज साप्ताहिक समाचार पत्र मालिकों और पत्रकारों को जबकि उसके क्लब का नाम इंदौर पत्रकार क्लब है क्यों नहीं सदस्य बनाती और घुसने देती। जहां तक श्री अजमेरा का सवाल था चूंकि अजमेरा ने सीधे ही रेसीडेंसी में जब साक्षात्कार लेने का केन्द्रीय राज्य मंत्री मुनियप्पा से प्रयास किया तो उन्होने ही शाम को 4.30 बजे प्रेस क्लब में बुलाया था। इसलिए ये शाम को वहां साक्षात्कार लेने जाना पड़ा। अन्यथा वैसे भी इंदौर क्लब में बैठे चाटुकारों और भांडों के बीच साप्ताहिक समाचार पत्र वाले जाना पसंद ही नहीं करते।

जब मुनियप्पा ने ये कहा कि म.प्र. की सड़कें बहुत अच्छी हैं। म.प्र. बहुत प्रोग्रेस किया तो किसी चाटुकार ने प्रतिप्रश्न तो दूर उनकी बात तक को नकार भी नहीं सके। अंत में श्री अजमेरा ने जनता के हित में प्रश्न पूछना शुरू किए तो सतीष जोशी ने बार-बार अंगुली के इशारे से चुप करने के लिए कहते रहे। परन्तु समय माया ने शत्रुतापूर्ण माहौल के बीच भी जनता के हित को ध्यान में रखकर वो प्रश्न पूछ ही लिए जो म.प्र. की जनता की जिंदगी में नासूर बन कर सदियों तक बहने वाले हैं।

सरकार काहू की भ्रष्टन को हानि

लोक स्वा. यांत्रिकीय तिवारी 1 वर्ष से इंदौर में कुंडली मारे बैठा है। ये भ्रष्ट करोड़ों कमा चुका है। नियम कानून और सरकारें सब इसकी मुट्ठी में हैं। अपनी वसूली के लिए क्या-क्या कुकर्म नहीं करता। एक ही जोशी खानदान के 4 लोग इसके विभाग में हैं। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की वर्दी में खाने से लेकर घटिया स्तर की पाइप लाइन डलवाने, घटिया स्तर का रखरखाव, टूट-फूट, लाइनमें फटने, फूटने में काम करेगी विभाग के मजदूरों बिल की वसूली से मस्टर वसूली होगी बाहर के मजदूर लगाकर दिखाने से चार चहेते ठेकेदार ही लूटपाट करेंगे। बाकी ने यदि काम ले भी लिया वो भुगतान नहीं मिलेंगे। फिर इस हरामखोर पर लोकायुक्त की जांच आय से ज्यादा संपत्ति के आरोप में भी चल रही है, इसके भ्रष्टाचार, लूट-खसोट के चर्चे पूरे विभाग में हैं। इसकी सैकड़ों शिकायतें दिग्गी दानव के पास भी पहुंची थीं और गौर बाबू के पास भी पत्रकारों, कर्मचारियों और नेताओं के द्वारा पहुंचाई जाती रही हैं, परन्तु इस धूर्त शूकर के लूटने और लुटाने के खेल के सामने क्या महापौर, क्या निगमायुक्त, जिलाधीश, अधीक्षण यंत्री, मुख्य मंत्री, मुख्य कार्यकारी अभियंता, प्रधान सचिव, मंत्री मुख्यमंत्री गौर नहीं फरनाते। और ये शूकर जनता के धन को अगाड़ू पिछाड़ू से चाट ही जाते हैं। अर्थात सरकार काहू की भ्रष्टन को का हानि।

इंदौर- मु. लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग में बैठे अधिकारी से लेकर मंत्री तक जनता को पानी मिले न मिले उसका धन कैसे पी जाते हैं। एस.एन. तिवारी जैसे भ्रष्ट के कुकर्मों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाते हैं। सरकारें बदल जाते हैं, परन्तु भ्रष्टाचारों की गंदगी चाटने वालों की कोई असर नहीं होता। वो तो स्पष्ट ढंग से खुले में वक्तव्य देते हैं। लूटो और लुटाओ, क्या मंत्री, क्या यंत्री, क्या संतरी सबको अपने तरीके से नचाओ, सारे नियम कानून भूल जाओ जब इतने भ्रष्टाचार के बाद इतनी गुजर गई जबकि लोकायुक्त के छापे पड़े इतने समाचार पत्रों ने इतने सारे कुकर्म छापे तो भी क्या उखड़ा क्या बिगड़ा? फिर चाहे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की वर्दी हो अस्तरीय पाइप लाइन बिछाने का कार्य हो, ठेकेदारों को जिनसे सेटिंग हो बिना, अधूरा, अस्तरीय कार्य के बाद भी करोड़ों का भुगतान हो जाता है।

इस लूटपाट के खेल को संपन्न करने के लिए उसने अपने एक ही विभाग में जोशी खानदान के तीन भाई और बड़े भाई की एक बीवी चार व्यक्ति इसी के हाथ के नीचे ये शूकरों की फौज, कर्मचारियों के भविष्य निधि भुगतान के अंश भुगतान में से लेकर यात्रा ऊत्ते बिल, चिकित्सा भुगतान, छुट्टियों से लेकर हर बात में पैसा डकारती है। इस विभाग में इसके अंतर्गत कार्य कर रहे वाहनों के झूठे मरम्मत और डीजल के बिलों के भुगतान से लेकर विभागीय सामग्री की खरीद कार्यों में भी करोड़ों की जालसाजी कर चुके हैं। यदि इस चारों के कुकर्म जो एस.एन. तिवारी के खास हैं, देखे जाएं पिछले 10 वर्षों के भी न केवल जोशी वरन तिवारी भी निपट सकते हैं।

अब जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यपालों को किसी भी जांच करने के अधिकार सौंप दिए हैं। इस भ्रष्ट लुटेरे की शिकायत राज्यपाल से की जाएगी। उसके कुकर्मों की कुछ झलक अगले अंकों में।

(पेज 7 का शेष)

युद्ध में झोंके जा रहे अवयस्क बच्चे.....

गठबंधन ने 20 से अधिक ऐसे देशों और क्षेत्रों में अध्ययन किया जहां मार्च 2002 के बीच सशस्त्र युद्ध हुआ। बाल सैनिकों का इस्तेमाल करने वाले देशों की संख्या उजागर करने के बावजूद गठबंधन का कहना है कि बच्चों के संरक्षण के लिए कानूनी ढांचा तैयार होने के बाद से बीते तीन साल के दौरान खासी उपलब्धि हासिल की गई है। गठबंधन की रिपोर्ट के मुताबिक अगस्त 2004 तक 77 देश युद्ध में प्रत्यक्ष भागेदारी के लिए न्यूनतम आयु 18वर्ष निर्धारित की गई है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि अमेरिका ने संलेख पर दिसंबर 2002 में हस्ताक्षर किए, लेकिन इसके बावजूद अफगास्तिान और इराक अभियान में हिस्सा लेने वाले कम से कम 62 अमेरिकी सैनिकों की उम्र 18 व, से कम थी। गठबंधन ने संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद से अनुरोध किया है कि मामला केवल बाल सैनिकों का इस्तेमाल करने वाले देशों का नाम उजागर करने और उनकी निंदा करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि बाल सैनिकों के इस्तेमाल पर रोक की मांग प्रभावी तौर पर लागू की जानी चाहिए। गठबंधन ने कहा कि यदि सरकारें और सशस्त्र समूह उसके प्रस्ताव को कोरी भाषणबाजी का ही दर्जा देंगे तो अंतरराष्ट्रीय जवाबदेही तय करने की दिशा में हुई प्रगति समाप्त हो जाएगी।

इंदौर क्लाथ मार्केट को-आपरेटिव्ह बैंक लि.

प्रधान कार्यालय : 85, सीतलामाता बाजार, इंदौर फोन-2459471 (प्रबंधक), 2450472 (अध्यक्ष)

व्यावसायिक लिमिट	वाहन ऋण	आवास ऋण	ऋणों पर कोई प्रोसेसिंग चार्जेस एवं अन्य चार्ज नहीं ड्राफ्ट सुविधा उपलब्ध।
11%ब्याज दर पर उपलब्ध	10.90%ब्याज दर पर उपलब्ध	9%ब्याज दर पर उपलब्ध	

सर हुकुमचंद मार्ग, गुमाश्ता नगर एवं कालानी नगर शाखा में न्यूनतम किराये पर लॉकर सुविधा उपलब्ध।

राजेन्द्र सुराणा (प्रबंधक)	मदनलाल रावल, सुश्री अमिता पांचाल (उपाध्यक्ष)	राजाराम मुछाल (अध्यक्ष)

संचालकगण-हंसराज जैन, अमरीश दम्माणी, शिवप्रकाश अजमेरा, हरिकिशन मुछाल, श्रीकिशन मंत्री, रतन पाटोदी, केवस सोनी, ओमप्रकाश व्यास, राजेश आजाद, विजयकुमार जैन, अनिल कुमार नीमा, श्रीमती साधना अग्रवाल, राजेन्द्र टी. सुराणा, बाबूलाल पाटोदी, महेन्द्र अग्रवाल

प्रतिनिधि-(1) लीलाधर मानधन्या (इं प्रीमियर को-ऑप. बैंक लि.), (2) लक्ष्मीनारायण मेड़तवाल (जिला सहकारी संघ)

शाखाएं- 8, सीतलामाता बाजार, इंदौर फोन-2459882, 2459713, 23, सर हुकुचंद मार्ग इंदौर फोन-2459662, 2459494, 4 गुमास्ता नगर इंदौर फोन-2780070, 625 एरोड्रम रोड (कालानी नगर), इंदौर फोन-2629023, 23 सियागंज (बंग चेम्बर्स) इंदौर फोन-2547969

सहकारिता सप्ताह के अवसर पर समस्त सदस्यों वं शुभचिंतकों का

हार्दिक अभिनंदन

त्रिमूर्ति सहकारी साख संस्था मर्यादित 110, सुभाष नगर, इंदौर

भविष्य की योजनाएं: संस्था सदस्यों के लिए मेडीक्लेम पॉलिसी अतिशीर्घ प्रदान की जावेगी। सदस्यों को गृह उपयोग वस्तुओं के लिए अधिक से अधिक ऋण प्रदान करना-सदस्यों के लिए स्वयं के भवन के लिए प्लाट उपलब्ध कराना एवं भवन हेतु ऋण प्रदान करना। कुटम्ब सहायक योजना के अंतर्गत सहायता राशि रु. 50,000 प्रदान करना- सदस्यों के पुत्र/पुत्री को छात्रवृत्ति प्रदान करना।

अध्यक्ष- सरदार जोरावरसिंग नारंग (एड.), उपाध्यक्ष चंद्रप्रकाश बोरासी, श्रीमती सीता बाई अनुसे

संचालक- श्रीमती लता बाई गायकवाड़, श्री प्रशांत देरेकर, श्री सुभाष गोरे, प्रबंधक-रविन्द्र यादव, जिला संघ प्र.नि.:श्री गंगाराम पारे

इन्दौर ए.के. व्ही.एन. का भ्रष्टाचार

इंजीनियर, आई.ए.एस. सब जुटे लूटपाट में

इन्दौर के औद्योगिक विकास के लिए केन्द्र सरकार म.प्र. राज्य सरकार और वित्तीय संस्थाओं से लिए गए ऋणों को इन्दौर औद्योगिक केन्द्रीय विकास निगम लि. में बैठे महाभ्रष्ट 16 सहायक, 3 कार्यपालन और उप-अभियंता कैसे लूटपाट में लगेहैं, इसकी जानकारी उनके भवनों, बैंक बैलेंस, जिसमें सलूजा का पैसा तो ठेकेदारों और ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में भी लगा है। व्यास और गुप्ता का पैसा अनेक जगह विभिन्न पोर्टफोलियोस में है। इन सब भ्रष्टों को हांकने के लिए एक आई.ए.एस. सौरभ जैन बैठा है। राका महाप्रबंधक है, जो पिछले 5-6 वर्षों से यहां पर है, परन्तु केवल प्रबंधन संभालने की जिम्मेदारी है। पिछले कई अंकों में पाठकोंने इस भ्रष्ट विभाग के भ्रष्टाचार के म.प्र. राज्य औद्योगिक विकास के प्रबंध संचालक से लेकर इन्दौर के म.प्र.औद्योगिक विकास के प्रबंध संचालक से लेकर इन्दौर के म.प्र. औद्योगकि विकास केन्द्र निगम के कारनामों की वृहत्त श्रृंखला समय माया में पढ़ चुके है। पर यहां के हरामखोरों से लेकर दिग्गी दानव, उमा पाखंडियों गौर नाक परकोई खास असर नहीं पड़ा, पड़ेगा भी क्यों सभी लूट और भ्रष्टाचार में शामिल हैं।

इसका भ्रष्टाचार लूट-खसोट के कारण प्रदेश की वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी को भयानक बेरोजगारी झेलना पड़ रही है। जिसका सीधा असर जनता, समाज, प्रदेश और देस की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है, इन्हीं भ्रष्ट अभियंताओं, गुप्ता और व्यास के साथ ही 16 अन्य सहायक अभियंताओं इन्दौर के प्रबंध संचालक चाहे वर्तमान का सौरम जैन हो, विवेक अग्रवाल या पूर्व के अन्य प्रबंध संचालकों की धूर्तता का ही परिणाम है कि जिस पीथमपुर को डेट्रायर बनाने की योजना थी, वर्तमान में उद्योग बंद पड़े है। न पर्याप्त बिजली, पानी, अच्छी सड़क़ें, स्ट्रीट लाइट जैसी आधारभूत संरचना का करोडों रु. इसके इन्हीं अभियंताओं ने डकारा है, चाहे फिर उसमें भ्रष्ट पी.डी. जैन, सलूजा जैसे अन्य सभी अभियंता ही थे, इन हरामखोरों के रु. 25 से 50 लाख के मकान, लाखों रु. का विनियोजन आखिर कहां से आया? फिर यदि मात्र सभी 21 इंजीनियरों की जांच बैठा दी जाए, वैसे व्यास, गुप्ता, जैसे भ्रष्टों की कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जांचे चल भी रही हैं।

यदि से सारी भ्रष्ट शूकरों की फौज नोचखसौट 10-20 प्रतिशत तक ही भ्रष्टाचार करे और तरीके से कार्य करे तो कम से कम इनके पास औद्योगिक़ क्षेत्रों में देवास क्र. 2 व 3, मक्सी, सिया, रंगवासा है, विकास केन्द्रों में पीथमपुर, खेड़ा और मेघनगर हैं। इसमें फैक्ट्रीयों की लीज, पानी आपूर्ति का पैसा भी करोडों में वसूली होता है। साथ ही वहां की सड़कों की रात्रिकालिन प्रकाश व्यवस्था आदि में भी खर्च किजाने वाले करोड़ों रु. के कार्यों में भी वे सारे श्वानों की फौज भारी लूटपाट करती है। सड़कों, पानी की आपूर्ति और निकासी में भी इनके घोटाले की खबरें आए दिन पढ़ने में आती है। यदि ये तरीके से कार्य करे तो उद्योगों में रोजगार बढ़ाने के साथ अच्छा उत्पादन प्रदेश और देश की अर्थव्यवस्था सुधार में भी महत्वपूर्ण सहयोग दे सकता है।

अब देखे भ्रष्टाचार में ठेकेदारों की भूमिका, एक ठेकेदार आसुरदास वाधवानी जो पीथमपुर क्षेत्र में रु. 30 करोड़ से ज्यादा का कार्य अकेला ही संबाल रहा है, जबकि निर्माण कार्यों में ईंटों की गुणवत्ता से लेकर लोहे और सीमेंट 53 ग्रेड के स्थान पर 43 ग्रेड उपयोग की जा रही है। स्वाभाविक-सी बात है चारों तरफ लूट, भ्रष्टाचार और हरामखोरी का आलम है। पैसा उद्योगपतियों का सब्जबाग दिखाकर फंसवाया जा रहा है। स्वाभाविक है कि सुविधाओं के अभाव में इनकी लूटखसोट की मानसिकता से पीथमपुर, देवास, मक्सी में तालेबंदी बढ़ रही है। जब इनसे पूछा गया तो उन्हें ही उद्योगपतियों और उद्यमियों पर ही दोषारोपण कर सक्सेना, शाह और उद्योगपतियों को ही दोषी ठहराते हुए कहते हैं कि सारी केन्द्र व राज्य सरकार की सुविधाओं करो की छूट का फायदा उठाकर जान-बूझकर अपनी फैक्ट्रीयां बंद करने में लगे हैं। (अगले अंक में पढ़िए -)

कंप्यूटर सामान और सेवा देने वाले लुटेरे और हरामखोरों की फौज

हरामखोरों से सामान खरीदी करते समय उत्पादक गारंटी का समय, उत्पाद का असली कार्यक्रम की सीडी व क्र. सब कुछ लिखवाकर लीजिए

वर्तमान युग में कदम-कदम पर कम्प्यूटरों, उसके उपकरणों उसका उपयोग करने के लिए व विभिन्न कार्यों को करने के लिए उसके कार्यक्रमों की सीडीज के नाम पर वर्तमान में अधिकांश माल विक्रेता आपको पुराना, अधूरा नकली या दूसरी घटिया उत्पादक का मरम्मत किया हुआ, वर्तमान बाजार दर पर टिका देता है। चूंकि अधिकांश लोग अपने कार्यों को पूरा करने से मतलब रखते हैं।

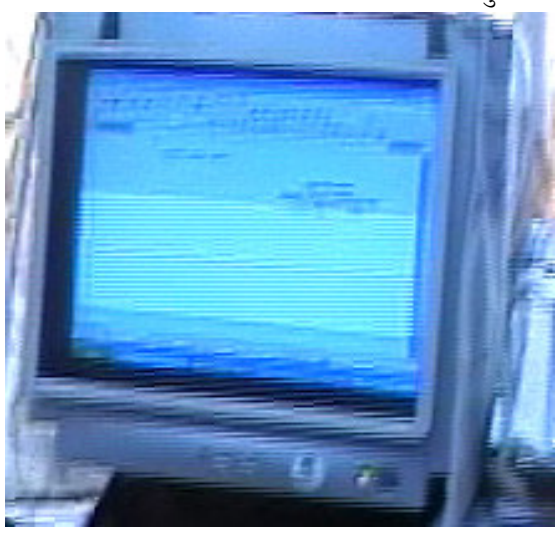

इसलिए चालू कर आपसे पैसे वसूल कर रफू चक्कर हो जाते हैं। जब पकड़े जाते हैं तो झूठ और मक्कारी की लफ्फाजी का सहारा लेकर भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। फिर भी इन हरामखोर लुटेरे गिद्धों की फौज को शर्म आने की तो दूर, आपको नए उत्पादों के बारे में बताकर नये शब्दों का मायाजाल बिखेरकर फिर इतने पैसे खर्च कर देंगे तो ये हो जाएगा इससे आपका ये फायदा होगा। आपका पुराना सामान बेकार हो गया कहकर ले जाएंगे और किसी दूसरों को चिपका बेच कर और आपको किसी दूसरे का पुराना माल बेचकर धन हड़प करते रहेंगे।

आपके कार्यों के लिए जो कार्यक्रम आपके कम्प्यूटर की हार्ड ड्राइव में डालेंगे तो सारे पंजीकृत कार्यक्रम जो कंपनी के होंगे उसकी जाली या प्रतिलिपि होगी या सप्ताह, महीने की सीमा का होगा, जिसमें तारीखों की हेराफेरी कर आपको उपयोग बताकर अपनी सेवा शुल्क लेकर खिसक लेंगे। फिर आप परेशान होते रहिए। पढ़िये विस्तार से इन मक्कारों के लूटने की असलियत।

इंदौर। चारो तरफ पूरे विश्व में कम्प्यूटर्स का बोलबाला है। अधिकांश शिक्षा से लेकर दुकानों पर खरीदी-बिक्री कार्यालयों में बिलिंग सेलेकर वसूली तक, बैंकिंग उद्योग, शासकीय कार्यालयों में भी धीरे कम्प्यूटर्स अपनी जगह बनाते जा रहे हैं। धीरे-धीरे हमारा भारत भी कम्प्यूटरीकरण की ओर बढ़ रहा है। दुनिया जानती है कि हमारे कम्प्यूटर्स इंजीनियर्स, व्यावसायिक गतिविधियों की बाहरी, स्त्रोतों को उपलब्ध करवाने का भारत भी विश्व में उच्च केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है। कम्प्यूटर्स से न केवल कार्यों को उच्च शुद्धता व शीघ्रता से करने में सहायता मिलती है वरन प्रिंटिंग, डिजाइनिंग, संचार व्यवस्था को संपन्न करने में वर्तमान में उसके बिना सोच पाना भी दूभर हो जाता है।

इंटरनेट, ई-मेल से अब दुनिया भर की जानकारी घरों की टेबल पर उपलब्ध हो जाती है। यही कारण है कि अब अधिकांश मध्यमवर्गीय घरों में भी भारत में कम्प्यूटर्स होना आवश्यक हो गया है। इसके लिए आवश्यक है कम्प्यूटर्स खरीदना और उसके बारे में जानना, नि:संदेह सूक्ष्म तकनीकी होने के कारण साधारण उपभोक्ता को कम्प्यूटर्स हार्डवेयर और साफ्टवेयर दुकानदार भारी चूना लगाते हैं।

कम्प्यूटर्स हार्डवेयर अर्थात जो उपकरण जिनकी सहायता से कम्प्यूटर्स कार्य करते हैं और साफ्ट वेयर वो अदृश्य कार्यक्रम जिकी सहायता से आप अपनी इच्छानुसार कार्यों को संपन्न करते हैं।

नि:संदेह दोनों ही में कम्प्यूटर्स विक्रेता भारी लूट करते हैं। अधिकांश कंप्यूटर्स और कार्यक्रम संचालित करने वाले साफ्ट वेयर्स में छल और जालसाजी से वसूली करना इनका पेशा बन चुका है।

इसलिए जब भी कम्प्यूटर खरीदें हर सामान को संग्रहित करने और जोड़ कर तैयार करने से पहले आप हर सामान की जानकारी लें उसका उत्पादक, गारंटी, कीमत की ठोस जानकारी हासिल कर लें। बाकायदा उस सूची में उत्पादक, गारंटी, कीमत को सूचीबद्ध करके तलाश कर लेवें। साथ ही वह उपकरण किस साफ्टवेयर पर कार्य करेगा, उसका नंबर, कोड भी संग्रहित कर लें। जैसे सीडी राइटर खरीद रहे हैं, स्केनर, मॉडम उनके उत्पादकों, गारंटी, उनके साफ्टवेर के गुप्त क्रमाकों को भी नोट कर लेवें तब ही उसमें तारीख लिखवाएं अन्यथा पुराना माल सुधारकर भी चिपका दिया जाता है। बाद में बार-बार खराब होता है तो वो उन्हें ही वो हरामखोर कंप्यूटर विक्रेता आपको नई पट्टी पढ़ाने लगता है कि इसमें अब और अग्रिम तकनीकी आ गई है। उससे ज्यादा अच्छा काम होगा और वो सामान मुफ्त में लेकर कचरा बताकर वह कंप्यूटर विक्रेता अपने पास रख लेता है। फिर वही कि उसमें थोड़ा सुधार कर फिर किसी तीसरे के कम्प्यूटर में फिट कर दिया जाता है और पूरे पैसे वसूल कर लिए जाते हैं।

वर्तमान में मात्र इंदौर में ही ऐसे भ्रष्ट, महाधूर्तों की फौज लगभग 400 से ज्यादा हो गई है, जिसमें कम्प्यूटर्स वायरसों ने इनकी कमाई के रास्तों को और पुख्ता कर दिया है। यही आपके कम्प्यूटर में एंटी वायरस डालेंगे और वही एंटी वायरस आपके कम्प्यूटर्स को जाम करेंगे फिर आप बुलाएंगे तो एक बार आने का रु. 250 से 500 शुल्क वसूलेंगे।

दवा बाजार और सिल्वर माल में ही इस प्रकार के जालसाजों और लुटेरों की भरमार है जो उल्टे-सीधे तरीके से अपने कंप्यूटर्स, हार्डवेयर और नकली साफ्ट वेयर्स बेच कर न केवल वाणिज्य कर विभाग को वरन आयकर और कस्टम व एक्साइज को करोड़ों का चूना लगाते हैं। साथ ही माल बेचने के बाद आप अगर किसी परेशानी में पड़ जाते हैं और कम्प्यूटर्स काम नहीं करते या बार-बार अटकना, कार्यक्रमों का उड़ना, फाइलों का उड़ना शुरू होता है और आप उन्हें बुलाते हैं तो सुबह-शाम कह कर फिर ये हार्डवेयर और साफ्टवेयर विक्रेता या सेवाएं देने वाले आपको 15-15 दिन तक अटका कर रखते हैं। आपका काम रुकता और परेशानी बढ़ती है। इससे इन हरामखोरों को कोई फर्क नहीं पड़ता। वो आपको जरूर आपके नियोजन का विफल कर आपके जीवन की गति और लक्ष्य को आवश्यक रूप से बिगाड़ते हैं।

इसलिए ये सारी बातें पूर्व निर्धारण कर ही कम्प्यूटर्स विक्रेता के पास जाएं साथ ही जिससे आप कम्प्यूटर खरीद रहे हैं उसके पूर्व उसकी वास्तविक स्थिति कम से कम 3-4 लोगों से, ग्राहकों से अवश्य जानकारी ले लेवें, ताकि भविष्य में उलझन में न पड़ें।

सुकल्या ग्राम
गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्या.
35/ए, दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुकल्या ग्राम, इन्दौर
सहकारिता सप्ताह पर समस्त सदस्यों का
हार्दिक अभिनंदन
-भगवानसिंह बेलिया (अध्यक्ष)
संस्था द्वारा विकसित की गई कॉलोनी-वीणा नगर

इन्दौर जिला सहकारी संघ मर्यादित
किला भवन, किला मैदान, इन्दौर
अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह 2003
स्वर्ण जयंती के अवसर पर समस्त सहकारीजनों का
हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं
बलवंतसिह राठौर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी
दुलीचंद मुकाती, उपाध्यक्ष
राधेश्याम पटेल, अध्यक्ष
एवं समस्त संचालकगण

नगर निर्माण प्रगतिशील कर्मचारी गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्या. इन्दौर
शहीद भगतसिह बालोद्यान, प्रगति नगर, इंदौर (म.प्र.)
सहकारिता की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाओ
अर्थ बिना-सब व्यर्थ-बिना सहकार नहीं उद्धार
सहकारिता सप्ताह के अवसर पर हार्दिक अभिनंदन
मूलचंद मनकेले (उपाध्यक्ष) उमाकांत काले (अध्यक्ष)
संचालक-राव साहेब भंवर, जयनारायण कदम, रमेशचंद्र गुप्ता, शैलेष पाटोदी, विलाश देशमुख, श्रीमती स्नेहलता गुप्ते, श्रीमती शालिनी रुद्र
प्रतिनिधि-मांगीलाल शर्मा, जगदीश गौहर

औद्योगिक स्वा. एवं सुरक्षा भ्रष्टाचारियों की फौज

95 प्रतिशत उद्योगों में कारखाना अधि. की धज्जियां उड़ रही हैं ये वसूली में व्यस्त

इंदौर में म.प्र. राज्य के श्रम विभाग का मोती बंगले में मुख्यालय स्थित है। श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए भारतीय कारखाना अधि. 1948 और म.प्र. कारखाना नियम 1962 के अंतर्गत श्रमिकों के उद्योगों जनित प्रदूषण खतरनाक वातावरण से उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए पूर्ण व्यवस्था की गई है। उसके अंतर्गत यहां संचालक, उपसंचालक और सहा. संचालकों के साथ निरीक्षकों की भी फौज बैठी है। पर संचालक से लेकर निरीक्षकों तक कोई इस भ्रष्ट हरामखोर, फौज को केवल महीने की वसूली से मतलब है। बाकी सारी खानापूर्ति कर दी जाती है। जबकि सच्चाई यह है कि न केवल इंदौर और इससे जुड़े 95 प्रतिशत और पूरे प्रदेश के लघु और मध्यम श्रेणी के उद्योगों में निर्माण से लेकर दैनंदिनी उत्पादन कार्यों में श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की स्थिति मालिकों की दया पर निर्भर करती है। अधिकांश लघु, मध्यम, वृहत और विशाल उद्योगों के प्रबंधक इन श्वानों को टुकड़ा डालकर हड़का देते हैं। इन स्वानों की फौज में संचालक रा.म. चौकसे, उपसंचालक के.सी. व्यास, न.कु. जैन, बीसी गुप्ता सभी उपसंचालक हर संभाग मुख्यालय पर औद्योगिक क्षेत्र में बैठे उपसंचालक और 20 सहायक संचालकों को हर फैक्ट्री में खतरनाक मशीनों, उत्पाद, सह उत्पादों से व कार्य के दौरान कार्यरत श्रमिकों के स्वास्थ्य व सुरक्षा की जिम्मेदारी होती है, इसके विपरीत सारे शूकरों की फौज मात्र खानापूर्ति कर वसूली की गंदगी चाटने में लगी है। उसे कोई मतलब नहीं कि श्रमिक मर रहे हैं या उनका स्वास्थ्य से खिलवाड़ हो रहा है।

धाराएं

प्रारम्भिक-1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ, 2. परिभाषाएं, 3. दिन के समय के निर्देश, 4. विभिन्न विभागों की पृथक-पृथक कारखानों या दो या अधिक कारखानों को एक कारखाना घोषित करने की शक्ति, 5. लोक आपात के दौरान छूट देने की शक्ति, 6. कारखानों का अनुमोदन, अनुज्ञापन और रजिस्ट्रीकरण, 7.-क अधिष्ठाता के साधारण कर्त्तव्य, 7ख. कारखानों में प्रयोग के लिए वस्तुओं और पदार्थों की बाबत विनिर्माताओं, आदि के साधारण कर्त्तव्य

निरीक्षक कर्मचारी वृन्द-8. निरीक्षक, 9. निरीक्षकों की शक्तियां, 10. प्रमाणकर्ता शल्य चिकित्सक, 11. सफाई, 12. कचरे और बहिस्त्राव का व्ययन, 13. संवादन और तापमान, 14. धूल और धूम, 15. कृत्रिम नमीकरण, 16. अतिभीड़, 17. रोशनी, 18. पीने का जल, 19. शौचालय और मूत्रालय, 20. थूकदान

सुरक्षा-21. मशीनरी पर बाड़ लगाना, 22.मशीनरी में गति के होमें पर या उस पर उसके निकट काम, 23. खतरनाक मशीनों पर अल्प व्यय व्यक्तियों का नियोजन, 24. बिजली काटने के लिए आघात गियर और युक्तियां, 25. स्वक्रिय मशीनें, 26. नई मशीनरी का अविष्ठन, 27. रुई धुनकियों के निकट स्त्रियों और बच्चों के नियोजन का प्रतिषेध 28. उत्तोलक और उत्थादक (होएस्ट्स एंड लिफ्ट्स) 29. उत्थापक यंत्र, जंजीरें, रस्सियां या उत्थापक टैकल, 30. परिक्रामी मशीनरी, 31. दाव संयंत्र, 32. फर्श, सीढ़ियां और पहुंच के साधन, 33. गर्त, चौबच्चे, पर्शों में विवर आदि, 34. अत्यधिक वजन, 35. आखों का बचाव, 36. खतरनाक धूम गैसों आदि के प्रति पूर्वावधानियां, 36-क. वहनीय विद्युत प्रकाश के प्रयो की बाबत पूर्वावधानियां, 37. विस्फोटक या ज्वलनशील धूल, गैस आदि, 38. आग लगने की दशा में पूर्वावधानियां, 39. खराब भागो के ब्यौरों या स्थिरता की परख अपेक्षित करने की शक्ति, 40. भवनों और मशीनरी की सुरक्षा, 40-क. भवनों का अनुरक्षण, 40-ख. सुरक्षा अधिकारी, 41. इस अध्याय की अनुपूर्ति के लिए नियम बनाने की शक्ति

परिसंकटमय प्रक्रियाओं से संबंधित उपबंध-41-क. स्थल मूल्यांकन समितियों का गठन, 41-ख. अधिष्ठाता द्वारा जानकारी का अनिवार्य प्रकटीकरण, 41-ग. अधिष्ठाता का परिसंकटमय प्रक्रियाओं के संबंध में विनिर्दिष्ट उत्तरदायित्व, 41-घ. केन्द्रीय सरकार की जांच समिति नियुक्त करने की शक्ति, 41-ङ. आपात स्तर मान, 41-च. रासायनिक और विषैले पदार्थों को कुला छोड़ने की अनुज्ञेय समाएं, 41-छ. सुरक्षा प्रबंध में कर्मकारों का भाग लेने, 41-ज. कर्मकारों का आसन्न खतरे के बारे में चेतावनी देने का अधिकार

कल्याण-42. धुलाई की सुविधाएं, 43. वस्त्रों को रखने और सुखाने के लिए सुविधाएं, 44. बैठे की सुविधों, 45. प्राथमिक उपचार साधित्र, 46. कैण्टीन, 47. आश्रय, विश्राम कक्ष और बोजन कक्ष, 48. शिशु कक्ष, 49. कल्याण अधिकारी, 50. इस अध्याय की अनुपूर्ति के लिए नियम बनाने की शक्ति

वयस्कों के काम के घंटे-51. साप्ताहिक घंटे, 52. साप्ताहिक अवकाश दिन, 53. प्रतिकारात्मक अवकाश दिन, 54. दैनिक घंटे, 55. विश्राम अन्तराल, 56. विस्तृति, 57. रात की पारियां, 58. परस्पर व्यापी पारियों का प्रतिषेध, 59. अतिकाल के लिए अतिरिक्त मजदूरी, 60. दोहरे नियोजन पर निर्बन्धन, 61. वयस्कों के लिए काम की कालावधियों की सूचना, 62. वयस्क कर्मकारों का रजिस्टर, 63. काम के घंटों की धारा 61 के अधीन सूचना और धारा 62 के अधीन रजिस्टर के अनुरूप होना, 64. छूट देने वाले नियम बनाने की शक्ति, 65. छूट के आदेश देने की शक्ति, 66. स्त्रियों के नियोजन पर अतिरिक्त निर्बन्धन

अल्पवय व्यक्तियों का नियोजन-67. अल्पवय बालकों के नियोजन का प्रतिषेध, 68. अवयस्क कर्मकारों का टोकन रखना, 69. योग्यता प्रमाण-पत्र, 70. कुमार को अनुदत्त योग्यता प्रमाण पत्र का प्रभाव, 71. बालकों के लिए काम के घंटे, 72. बालकों केलिए काम की कालावधियों की सूचना, 73. बालक कर्मकारों का रजिस्टर, 74. काम के घंटों की धारा 72 के अधीन सूचना और धारा 73 के अधीन रजिस्टर के अनुरूप होना, 75. स्वास्थ्य परीक्षा की अपेक्षा करने की शक्ति, 76. नियम बनाने की शक्ति, 77. विधि के कतिपय अन्य उपबंधों का वर्जित होना

मजदूरी सहित वार्षिक छुट्टी-78. अध्याय का लागू होना, 79.वार्षिक मजदूरी सहित छुट्टी, 80. छुट्टी कालावधि के दौरान मजदूरी, 81. कतिपय दशाों में अग्रिम संदाय किया जाएगा, 82. असंदत्त मजदूरी की वसूली का ढंग, 83. नियम बनाने की शक्ति, 84. कारखानों को छूट देने की शक्ति,

विशेष उपबंध-85. अधिनियम को कतिपय परिसरों पर लागू करने की शक्ति, 86. सार्वजनिक संस्थाओं को छूट देने की शक्ति, 87. खतरनाक संक्रियाएं, 87-क.गंभीर संकट परिसंकट के कारण नियोजन प्रतिषिद्ध करने की शक्ति, 88.कतिपय दुर्घटनाओं की सूचना, 88-क. कतिपय खतरनाक दुर्घटनाओं की सूचना, 89. कतिपय रोगों की सूचना, 90. दुर्घटना या रोग की दशाओं में जांच निर्दिष्ट करने की शक्ति, 91. नमूना लेने की शक्ति, 91-क. सुरक्षा और व्यवसायिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण

शास्तियां और प्रक्रिया- 92. अपराधों के लिए साधारण शास्ति 93. कतिपय परिस्थितियों में परिसर के स्वामी का दायित्व, 94. पूर्ववत दोषसिद्धि के पश्चात वर्धित दंड, 95. निरीक्षक को बाधित करने के लिए शस्ति, 96. धारा 91 के अधीन विश्लेषण के परिणाम को दोषपूर्णतया प्रकट कर देने के लिए शास्ति, 96-क. धारा 41 ख, ग और 41 ज के उपबंधों के उल्लंघन के लिए शस्ति, 97. कर्मकारों द्वारा अपराध, 98. मिथ्या योग्यता प्रमाण पत्र प्रयुक्त करने के लिए शस्ति, 99. बालक का दोहरा नियोजन अनुज्ञात करने के लिए शस्ति, 100. (विलुप्त), 101. कतिपय दशाओं में अधिष्ठाता या प्रबंधक को दायित्व से छूट, 102. न्यायालय की आदेश देने की शक्ति, 103. नियोजन के विषय में उपधारणा, 104. आयु के विषय में सिद्धिभार, 104-क. 'क्या साध्य है' की सीमा साबित करने का भार आदि, 105. अपराधों का संज्ञान, 106. अभियोजनों के लिए परिसीमा, 106-क. किसी न्यायालय की अपराध के लिए कार्यवाहियां, आदि ग्रहण करने की अधिकारिता

अनुपूरक-107. अपीलें, 108. सूचनाओं का सम्प्रदर्शन, 109. सूचनाओं की तामील, 110. विवरणियां, 111. कर्मकारों की बाध्याताएं, 111-क. कर्मकारों के अधिकार, आदि, 112. नियम बनाने की साधारण शक्ति, 113. केन्द्रीय सरकार की निर्देश देने की शक्ति, 114. सुविधाओं और सौकार्य के लिए कोई प्रभार न लेना, 115. नियमों का प्रकाशन, 116. अधिनियम की सरकारी कारखानों पर लागू होना, 117. इस अधियिन के अधीन कार्य करने वाले व्यक्तियों का संरक्षण, 118. जानकारी प्रकट करने पर निर्बन्धन, 118-क. जानकारी प्रकट करने पर निर्बन्धन, 119. 1970 के अधिनियम सं. 37 में किसी बात के होते हुए भी अधिनियम का प्रभावी होना, 120. निरसन और व्यावृत्ति, पहली अनुसूची, दूसरी अनुसूची, तीसरी अनुसूची।

म.प्र. में हो रही जानवरों की खालों की तस्करी

म.प्र. का वन विभाग का कार्य वनों की वृक्षों और उसमें निवासरत जंगली जानवरों की रक्षा करना है, परन्तु इसके विपरीत इसी वन विभाग के कर्मचारी ही अवैध कटाई और जानवरों के शिकार करवाने में पीछे नहीं रहते।

सन 1999 तक म.प्र. के जंगलों में 927 शेर और 851 तेंदुएं होने का दावा म.प्र. वन विभाग की म.प्र. की मुख्य वन संरक्षक और वन्य जीव संरक की पुस्तक करती थी, पर सच्चाई यह थी कि उस वक्त भी म.प्र. के जंगलों में कुल मिलाकर 200 से ज्यादा बाघ और 450 से ज्यादा तेंदुएं नहीं थे। वर्तमान संख्या ठोस आंकड़ों के अनुसार 150 से ज्यादा तेंदुएं और 400 से ज्यादा तेंदुएं नहीं हैं, क्योंकि शिकार की घटना में लगातार बढ़ रही है।

बाघ और तेंदुएं के शिकार सिवनी के जंगलों में सबसे ज्यादा होते हैं। इनके शिकारी इनकी खालों का जबलपुर, कटनी से होते हुए गोरखपुर, नेपाल से चन और हांगकांग के साथ नेपाल से ही यूरोप भेज देते हैं।

एक भारतीय वन्यजीव विशेषज्ञ ने दावा किया है कि पिछले पांच वर्षों में बाघों की खाल का अवैध कारोबार 10 गुना बढ़ चुका है और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो जल्द ही धरती पर इस शाही प्राणी का अस्तित्व मिट जाएगा। वैनिशिंग हर्ड्स फाउंडेशन के संस्थापक हर्षद पटेल ने एक काय4क्रम में व्याख्यान देते हुए कहा कि बाघ के चमड़े की तस्करी लगातार बढ़ती जा रही है।

उन्होंने कहा कि बाघ ही नहीं बल्कि तेंदुों की खाल का धंधा भी तेजी से फल-फूल रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कलाकृतियां और सजावटी वस्तुों का धंधा करने वाले लोग खाल के अवैध कारोबार को बढ़ावा देते रहे हैं। उन्होंने कहा कि सजावटी वस्तुओं के तौर पर उनके अंगों और खासकर खाल की खरीददारी करने वाले लोग इस धंधे को मजबूती दे रहे हैं। ब्रिटिश संग्रहकर्ता बाघ की खाल की खरीददारी पर लाखों रुपए खर्च कर रहे हैं। बाघ की खाल की खरीददारी के लिए वे 5500 पौंड तक की रकम चुकाते हैं। खाल का इस्तेमाल दीवार पर सजावटी वस्तुओं के तौर पर किया जाता है।

उन्होने बताया कि वन्यजीव प्राणियों के अवयवों का धंधा सालाना पाच अरब पौंड का हो गया है। इस कार्यक्रम में कई वन्यजीव विशेषज्ञ और पशु प्रेमियों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि दुनिया में अब 5000 जंगली बाघ ही बच गए हैं। इनमें से आधे भारत में हैं। इन बाघों को बचाए जाने की जरूरत है वर्ना इनका अस्तित्व मिट जाएगा। उन्होंने कहा कि न सिर्फ बाघ बल्कि एशियाई सिंह भी खतरे में है।

इंदूर परस्पर सहकारी बैंक लिमिटेड, इन्दूर
प्रशासकीय कार्यालय : परस्पर सहकार भवन 3/1, साथ तुकोगंज, इंदौर
पोबा.नं. 25 फोन (0731)2522141, 2523784, 2523784, 2522724 फैक्स 2528013
सहकारिता सप्ताह की शुभकामनाएं
सहकार ही उद्देश्य हमारा
सहकार से फैला उजियारा.....
संचालक मंडल-अनिल र. अभ्यंकर (अध्यक्ष), शेखर अ. किबे (मानसेवी सचिव), जगदीशचंद्र पं. वर्मा/श्रीमती उज्जवला वि. बापट (उपाध्यक्ष), चंद्रशेखर म. डगांवकर (अध्यक्ष, कार्यकारी समिति), कृष्णा वा. झारे उमाकान्त मा.-निमगांवकर, भालचन्द्र वि. चिपळूणकर, श्रीनिवास श. कुटुंबळे, डॉ. अनिल शं. कुटुंबळे, सौ. उज्जवला खं. बारगळ, डॉ. सुधीर ल. गोखले, विलास गो, राणे प्रकाश गौड़ सुबोध गो. काटे, मधुकर र. निस्खीवाले (मुख्य कार्यपालन अधिकारी)

बिना सहकार नहीं उद्धार
श्रीरामसिंह भाई सहकारी साख संस्था मर्यादित
ए-51/2, एम.आय.जी. कॉलोनी (आर.एस. नगर), इन्दौर फोन-2532075
श्री ब्रजमोहन शर्मा अध्यक्ष | श्री किशनलाल गतिया उपाध्यक्ष | श्री किशनलाल गतिया उपाध्यक्ष
संचालक मंडल-श्री जगन्नाथ तिवारी, श्री रामसिंह जादौन, मदनसिंह राजपूत, श्री रमेश कुमार अग्रवाल, रमेशचन्द्र शर्मा, रमाकांत शर्मा, श्री प्रहलाद मेहता, श्री सत्यनारायण शर्मा, श्रीमती हेन्सी थॉमस, श्री सुरेश कस्बे, श्री अशोक नायक प्रतिनिधि, इ.प्री.को. बैं. श्री कुंदन परिहार प्रतिनिधि जिला ह.संघ.

व्यापारिक औद्योगिक सहकारी बैंक लि., इन्दौर
महादेव शाहरा सभागृह संयोगितागंज, इन्दौर फोन-2477755, 66, 5084827
सहकारिता सप्ताह पर हार्दिक
अभिनंदन
महेन्द्रसिंह राजपाल प्रबंधक | श्रीमती किरण बागड़ी उपाध्यक्ष | राधेश्याम राठौर उपाध्यक्ष | रामेश्वरलाल असावा अध्यक्ष
संचालकगण- श्री गोपालदास अग्रवाल, श्री सुकुमाल सेठी, श्री प्रकाश व्होरा, श्री अरुण कुमार अग्रवाल, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री गिरीराज गुप्ता, श्री सतीश कुमार गुप्ता, श्री हरिमंगल, श्री विजयकुमार काला, श्री राजेश जिन्दल, श्रीमती उमा अग्रवाल।

सुयश विकास साख सहकारिता मर्यादित
सी-32, स्कीम नं. 51 (संगम नगर) इंदौर-452006 (म.प्र.) फोन : 0731-2617865
सहकारिता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
○सहकारी मूल्यों व सिद्धान्तों के प्रति समर्पित स्वायत्त सहकारिता○स्थापना वर्ष से निरंतर लाभ में तथा लाभ का 25 प्रतिशत लाभांश नगदी वितरण○शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजागोन्मुखी मार्गदर्शन, सहायता और वित्त पोषण○विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के मेधावी छात्राओ को प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रोत्साहन, सहायता और व्यक्तित्व विकास में योगदान ○विकासोन्मुखी साख○सभी प्रकार की बचत अमानतों पर राष्ट्रीयकृत व्यावसायिक बैंकों से 2 प्रतिशत से 3 प्रतिशत अधिक ब्याज○क्षेत्र के सदस्यों तथा आम नागरिकों के पानी, बिजली, सड़क स्वास्थ्य और सफाई संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु सार्थक पहल○50वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामना के साथ।
हरिनारायण दुबे (अध्यक्ष)
के.आर. वर्मा उपाध्यक्ष, सुधीर दाण्डेकर उपाध्यक्ष एवं समस्त संचालकगण

(पेज 1 का शे,)

अमरसिंग की चाल का शिकार.....

ओएनजीस ऑइल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन कोदता था। पैसा शासन और जनता का लगता था। पेट्रोल निकल ने पर भी ये हरामखोर रु. 200-500 करोड़ देकर उनके अधिकारियों को खरीद लेते थे। ओएनजीसी के अधिकारी उस कुएं का असफल बताकर बंद कर देते थे। ये धूर्त वहां की जमीन लेकर उस पर कब्जा कर बोलते थे कि रिलायंस के कुएं में पेट्रोल का अथाह भंडार निकला। असम बंगाल खाड़ी, ब्रह्मपुत्र नदी का छार में आने को कुंओं को ओएनजेसी ने खोदा पेट्रोल निकाला पर इन शातिरों ने पैसा देकर उन्हें खरीद कर अपना कब्जा दिखा दिया। इनके टूट जाने से ऐसी उच्च स्तरीय जालसाजियों के केल तरीके से नहीं खेल सकेंगे, जिससे राष्ट्र और राष्ट्र की जनता को फायदा होगा। रिलायंस इंफोकाम में भी प्रमोद महाजन को खरीद कर इन्होंने अपने डब्ल्यूएलएल को राष्ट्रीय स्तर पर कहीं से भी करो और सुनो की सुविधा उपलब्ध करवा दी थी। जबकि भारत संचार निगम जैसे 150 वर्षीय आपरेटर्स उसके सामने बौने सिद्ध हो गए। फिर रिलायंस इंफोकाम और टेलीकाम में अनाप-शनाप बिलों में जालसाजियां कर ये जता को लूटते रहे। न्यायालय दूर संचार नियमितिकरण प्राधिकरण इनके सामने टुकुर-टुकुर ताकता रहा और जनता लुटती रही। नि:संदेह जालसाजियों से भले ही मुक्ति न मिले, परन्तु कभी अवश्य होगी। अमरसिंग की बिसात र अनिल अंबानी जैसे हाथी की उपस्थिति से उसके वजीर और स्वयं अमरसिंग भविष्य में लंबी पारी खेलेंगे, जिसकी सबसे गहरी चोट गांधी खानदान को मिलेगी।

(पेज 8 का शे,)

प्रमोद महाजन.....

रिलायंस, हिन्दुस्तान लीवर, डालमिया से लेकर पूरे पश्चिमी भारत के सभी उद्योगपतियों से धन एकत्रित कर उपयोग में लेना इसमें सिद्ध हस्त है। इसलिए आडवाणी, वाजपेयी और यहां तक कि संघ भी इसके मामले में सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं बोलता। दूसरा संघ की बुजुर्ग फौज हर शब्द का बोलने से पहले तोलती है और वर्तमान से लेकर भविष्य में उसके प्रभावों का आंकलन कर ही कोई भी वक्तव्य सार्वजनिक रूप से जारी करती है। इस बीच ये भ्रष्ट, धूर्त अपना खेल कर वाकपटुता से भाजपा की प्रथम पंक्ति में बुजुर्गों को पटा कर सारे घटनाक्रम का पटाक्षेप करवा लेता है।

प्रमोद महाजन चुप्पा, घुन्नापनी लोकप्रियता घटते देख अपनी मूल प्रतिद्वंद्वी उमा भारती को नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ता, जब-जब उमा भारती राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरी इस मक्कार को कभी सहन नहीं हुआ वो चुपचाप मोहरा ..... उसके प्रभाव का आंकलन उमा भारती को नीचे गिराकर बदनाम कर करता है। उसकी हड़बड़ाहट पूर्ण स्थिति में उल्टा सीधा कर उसे खुद ही पछताने या मैदान छोड़कर भागने की स्थिति उत्पन्न कर देता है। उमा रती की कमजोरी है कि उसमें शालीनता और गंभीरता का अभाव है। वो इसकी हर चाल में शीघ्रता से फंस जाती है और धड़ाम से नीचे आ टपकती है। जो न केवल उसकी वरन पूरी पार्टी की स्थिति असमंजस पूर्ण हो जाती है।

(पेज 1 का शेष)

इटालियन सोनिया का षड्यंत्र....

आदिवासी और गांवों में रहने वाले कमजोर वर्ग के लोगों में यह संदेश पहुंचाने में वो सफल रहे।

दूसरी तरफ श्रीश्री रविशंकर ने जीवन जीने की कला के गुरु मंत्र पूरे एशिया यूरोप में फैलाकर परचम फहरा दिया। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन के व्हाइटहाुस में बुश को भी आर्ट ऑफ लिविंग सिखाकर राष्ट्र और हिन्दुत्व का नाम ऊंचा कर पोप के दिमाग में तूफान खड़ा कर दिया। इसलिए हिन्दुओं, हिन्दुत्व और धर्माचार्यों को बदनाम करने के लिए पोप ने सोनिया को और सोनिया ने जया को केन्द्रीय सहायता और उसके भ्रष्टाचार के प्रकरणों से दिल्ली में बैठकर मुक्ति दिलवाकर अपनी वफादारी को शंकराचार्य को अंदर करवाकर सिद्ध करने का मौका दियाय़

वो करुणानिधि जो जया का कट्टर शत्रु था, इसाई होने के कारणधूर्त शंकराचार्य की गिरफ्तारी को उचित बताने लगा। सोनिया ने भी कानून अपना काम करेगा कह कर पल्ला झाड़ लिया। तो त्रिया चरित्र वो लालू, शिबू सोरेन, जिन पर अनेकों की हत्या, भ्रष्टाचार, लूट-खसोट के सैंकड़ों आरोप हैं। तेरी सरकार में कैसे मंत्री बन गए। उनसे तो तेरी सरकार चल रही है। बड़े-बड़े अपराधियों पर सैंकड़ों हत्याओं के मुकदमे चलते रहते हैं वो इस देश में चुनाव लड़कर सत्ता में पहुंच जाते हैं। एक हिन्दुओं का परम पूज्य शंकराचार्य को सत्ताधीश अपनी सार्वभौमिकता को सिद्ध करने के लिए किसी की हत्या करवाता है। पुलिस उसकी प्रशासन उसका, उसको जलील करने के लिए सारे आरोप, सबूत तैयार कर उसको नीचा दिखाने के लिए अंदर कर दिया जाता है। न्यायालय भी सत्ताधीशों के इशारे पर उस वृद्ध साधु को मारने-पीटने के लिए रिमांड देता रहता है।

वैसे भी भारत में न्यायालयीन व्यवस्था न केवल महाभ्रष्ट है वरन ऊंच-नीच और सर्वोच्च न्यायालय में तो मुख्य व प्रधानमंत्री न्यायादीशों की नियुक्ति महाभ्रष्टों की ही करना पसंद करते हैं, ताकि न्याय उनकी कठपुतली बन नाचता रहे। पिछले दो वर्षों में राज्य के सर्वोच्च न्यायालय ने जनता केहितों के विपरीत बड़े ही हास्यास्पद फैसले दिए हैं। स्वाभाविक है अरबों रुपया का

इटालियन सोनिया का षड्यंत्र

लेन-देन हुआ तो सोनिया के सत्ता में रहते कैसे शंकराचार्य को जमानत और न्याय मिल सकता है।

जितना शंकराचार्य को बदनाम किया जाएगा पूरे विश्व में उतनी ही हिन्दू धर्म की हिन्दुत्व की बदनामी भी होगी और लोगों की मानसिकता में हिन्दुत्व में हिन्दुत्व व हिन्दू धर्म के प्रति विकृष्णा उत्पन्न होगी उतने ही लोग ईसाइयत कीतरफ आकर्षित होंगे, जहां उन्मुक्त यौनाचार, धर्म और धन उनका स्वागत करेगा।

विहिप के प्रवीण तोगड़िया के आरोप बेबुनियाद तो कहीं से भी नहीं। शंकराचार्य के बाद आशाराम बापू, सांई बाबा, श्री श्री रविशंकर, फिर जैनियों के विद्या सागर संत को आरोप लगाकर बदनाम करो, जनता की मानिसकता अपने आप बदल जाएगी और वो इटालियन पोप की एजेन्ट अपना कार्य संपन्न करने और पोप की घोषणा की सच्चाई सिद्ध कर सकेगी।

अधिकारी व कर्मचारी गढ़ इनकी रु. 10-20 हजार से लेकर जहां जैसी कमाई होती है मुट्ठी गर्म करके भेजा जाता है तो स्वाभाविक है कि इस संस्था के भ्रष्ट अंकेक्षक कैसे उनके खिलाफ कोई कड़वी टिप्पणी या प्रश्नावली तैयार कर सकते हैं। फिर ये कोई तकनीकी, चिकित्सा या विषय के विशेषज्ञ नहीं होते हैं, जो उस विभाग की हर तकनीकी जानकारी उपलब्ध या भ्रष्टाचार प्रकट कर सके। फिर उनहें वास्तविक वस्तु स्थिति से नहीं महज खाना पूर्ति से मतलब होता है। यदि कागजी खाना पूर्ति पूरी नहीं होती है तो ये संबंधित अधिकारी धन डकार कर करवा लेते हैं, क्योंकि लूट के हिस्से में ये भी साझेदार हो जाते हैं। औपचारिकता पूर्ण करने और अंकेक्षण की कार्यवाही दिखने के लिए ये कुछ हल्की-फुल्की टिप्पणियां लिख देते हैं। जबकि वहां शासन के धन से 80 से 100 प्रतिशत तक लूट हो रही होती है। फिर इन अंकेक्षकों की औकात तो हर अधिकारी तभी जान जाता है जब इनके आने के बाद हली बार वह चाय-पानी और नाश्ता करता व करवाता है।

यदि सी.ए.जी. जैसी संस्था तकनीकी रूप से स्थल निरीक्षण करे और तकनीकी अंकेक्षण सूक्ष्मता से ही करती होती तो देश में लोकायुक्त, सीबीआई, आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, पर सारे श्वानों की मुखेरी फौज यदि दोनों हाथो से डकारती है, तो एक हाथ से दूसरे श्वानों को टुकड़े फेंककर चाहे फिर वो सीएजी हो या लोकायुक्त आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो सबका भौंकना रोक देता है। यही कारण है कि म.प्र. में ही हर कांग्रेसी मुख्यमंत्री ने हजारों अरब करोड़ रुपए डकार लिए, फिर प्रदेश के दिग्गज भ्रष्ट आई.ए.एस. लाबी, आई.पी.एस., आई. एफ.एस. जैसे अरबों डकार गए। हर वर्ष शान से विभागीय अंकेक्षण करवाकर सी.ए.जी. या प्रदेश की शाखा का प्रदेशीय महालेखाकार ने आज तक कितनों को आरोप पत्र किया। कितनों के मुकदमे पेश हुए, कितनों में इन महालेखाकार कार्यालय के लोगों ने न्यायालयों में अपन उपस्थिति दर्ज करवाई। जबकि लोकायुक्त के छापों में, आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो के छापों में अधिकारियो के पास करोड़ों रु. का माल पकड़ा जाता है तो माननीय महामहिम राष्ट्रपति जी आपके नियंत्रण में बैठा यह पूरी महाभ्रष्ट संस्ता नियंत्रक महालेखाकार क्या कर रहा है। नि:संदेह जो पूरे देश के राज्यों और केन्द्र के विभागों की केन्द्र की सांसद और राज्यों की विधानसभाओ में जो प्रतिवेदन किये जाते हैं, महज खानापूर्ति बन कर रह जाते हैं। जो निष्कर्ष में मात्र आंकड़ों की बाजीगरी से ज्यादा कुछ नहीं होते सच्चाई में सहज ही पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि केन्द्र व राज्यों की इतनी सारी जनहित में कल्याण कारी योजनाएं चल रही हैं। उनका अरबों रुपया कहां जा रहा है। जबकि 1986 में ही राजीव गांधी ने कहा था कि शासन का बेजा जाने वाले एक रुपये का लक्ष्य पर मात्र 15 पैसे ही खर्च होता है। तो अब तो वर्तमान स्थिति और भी विकट हो गई है। कई जगह पूरा 100 प्रतिशत पैसा इंजीनियर्स, अधिकारियों द्वारा पूरा डकार लिया जाता है। जबकि यदि महालेखाकार की संस्था उन सबका अंकेक्षण कर चुकी है। फिर क्षेत्र में जाकर अंकेक्षण करती तो वास्तविकता मालूम पड़ती और इस महालेखाकार संस्था का औचित्य सिद्ध होता कि जता का पैसा जता के विकास कार्यों पर खर्च हुआ या

(पेज 8 का शेष)

सी.एन.जी भी करता है.....

सचमुच पूरा अधिकारियों ने डकार लिया। यदि तकनीकी विशेषज्ञ, सिविल, यांत्रिकीय इलेक्ट्रिकल्स इलेक्ट्रानिक्स इंजीयिर, चिकित्सक जैसे तकनीकी कर्मचारी होते तो अरबों रुपए की सड़कें भवन, पानी की पाइप लाइनें, टंकियो, स्वास्थ्य के क्षेत्र में लगने वाली अरबों की दवाइयो की गुणवत्ता आवश्यकता आदि पर शासन को अरबों रुपए प्रति वर्ष बर्बाद होने के बाद भी विकास स्वास्थ्य व अन्य योजनाओ का पैसा पानी में नहं बह जाता।

आखिर कहां जाता है अरबों रुपए का विश्व बैंक, एशियन डेवलपमेंट बैंक, नाबार्ड, जनसहयोग निधि, करों का पैसा, फिर करों की वसूली जो 50 प्रतिशत ज्यादा जमा नहीं होती। वाणिज्यिक कर, एक्साइज ड्यूटी, परिवहन व्यय, आय कर, स्टांप ड्यूटी, अरबों रुपये की मछली पालन रायल्टी, कोयले खदानों, रेल क रायल्टी, जंगलों की अरबों रुपए की लकड़ी, पेड़, औषधियां। फिर खजाने भी खाली केन्द्र के भी और सभी राज्यों के, सभी शासकीय नगर निकायों, निगमों की अरबों का धन सभी घाटे में क्यों और कैसे? मात्र महालेखाकार खातों के आंकड़ों की बाजीगरी करके गलतियां पकड़ कर कान मरोड़ सकता है। इसके अतिरिक्त उसका कोई वजूद नहीं साथ ही न वो भ्रष्टाचार में डूबे धन का मौलिक सत्यापन करने और पकड़ने में स7म है जबकि कदम-कदम घोटाले हर विभाग में हो रहे हैं।

भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक का प्रतिवेदन 31-3-2003 को समाप्त वर्ष (सिविल) मप्र सरकार को विधानसभा 2004 में प्रस्तुत प्रतिवेदन के पृष्ठ क्र. 24 पर प्रस्तुत रिपोर्ट जिसमें राजकोषीय असंतुलन दिखलया गया है। से बड़े विशेषज्ञ भी क्या समझ पाएंगे। इसके विपरीत मंत्रियों, अधिकारियों ने करोड़ों डकार लिए, जिसका कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। प्रस्तुत रिपोर्ट के आंकड़ों की बाजीगरी सिद्ध करती है।

1.9.1 राजकोषीय असंतुलन

सरकारी लेखे में घाटा इसकी प्राप्तियों एवं व्यय में अंतर प्रदर्शित करता है। घाटे की प्रकृति सरकार के राजकोषीय प्रबंधन की दूरदर्शिता दर्शाती है। इसके साथ ही घाटे का जिस प्रकार से वित्त पोषण कियाजाता है तथा जिस प्रकार से जटाए गये स्त्रोतों का उपयोग किया जाता है वे राजकोषीय सुदृढ़ता के महत्वपूर्ण परिचायक होते हैं।

राज्य का राजस्व घाटा (वित्त लेखे का विवरण पत्र 1) जो कि राजस्व प्राप्ति की तुलना में इसका राजस्व व्यय का आधिक्य होता है, 1998-99 में 2872 करोड़ रपए से घटकर 2002-03 में 1169 करोड़ रुपए रह गया। राजकोषीय घाटा जो कि सरकार की कुल उधारियां एवं इसके कुल स्त्रोतों के अंतर को दर्शाता है वह भी 1998-99 में 4127 करोड़ रुपए से घटकर 2002-03 में 4062 करोड़ रुपए रह गया। सरकार का प्रारंभिक घाटा भी 1998-99 में 2292 करोड़ रुपए से घटकर 2002-03 में 1560 करोड़ रुपए रह गया।

राजकोषीय घाटे की प्रतिशतता के रूप में राजस्व घाटा 1999-2000 में 75 प्रतिशत से घटकर 2002-03 में 29 प्रतिशत रह गया। 2002-03 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद की प्रतिशतता के रूप में राजस्व घाटा घटकर 1.41 प्रतिशत, राजकोषीय घाटा घटकर 4.89 प्रतिशत तथा प्रारंभिक घाटा घटकर 1.88 प्रतिशत रह गया तथापि 2003-04 के दौरान घाटा पर्याप्त बढ़ने की संभावना है क्योंकि, मध्यप्रदेश राज्य विद्युत मंडल को आर्थिक सहायता/सहायता अत्यधिक बढ़कर 2002-03 में 979.77 करोड़ रुपए से 2003-04 (दिसंबर 2003 तक) में 3114.59 करोड़ रुपए तक पहुंच गई।

लोक भष्टाचार निर्माण विभाग-निलंबन निपट गए

राष्ट्रीय राजमार्ग में हुए भ्रष्टाचार के संबंध में धामनोद से इंदौर की सड़कों के निर्माण कार्य में हुई भारी धांधलियों का कच्चा चिट्ठा इंदौर के महापौर और लोक निर्माम मंत्री कैलाश विजयवर्गीय जो स्वयं भी ठेकेदारों से धन लेने और अतिरिक्त फायदा पहुंचाने के लिए जिम्मेदार थे, ने सारा भ्र्टाचार जन्म जात भ्रष्ट इंजीनियर के.सी. जैन पर ढोलकर घोषणा की कि शीघ्र ही हटा दिया जाएगा। धामनोद से हटाकर इंदौर पदस्थ कर दिया। ताकि वो तरीके से रिंग रोड में हुए भ्रष्टाचार को और धामनोद में किए भ्रष्टाचार के सबूत मिटा सकें यहां प्रभारी बने सहायक अभियंता आर.के. व्यास जिसके शूकर के काले कारनामों के कच्चे चिट्ठे नई दुनिया में छपे हैं। पुन: सहायक अभियंता इंदौर संभाग रा. राजमार्ग बना कर पुन: यहं पदस्थ कर दिए गए। धामनोद का प्रभार यहां से चार उपखंडों कोंद कर दो उपखंड में बदल गए, जिससे दो इंजीनियर अन्यत्र पदस्थ किए गए। अत्रे को सौंपे की खबरें प्राप्त हुई हैं।

रा.रा. की सड़कों के निर्माण और मरम्मत में भारी घोटाले किए जाने के बाद भी सारे इंजीनियरों का प्रधान सचिव द्वारा बचा लिया गया स्वाभाविक था सभी ने भ्रष्टाचार के धन की गंगा में गोते लगाए थे। मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर ने भी चूंकि भ्रष्टाचार के धन में भ्रष्टाचार निर्माण में मंत्री विजयवर्गीय के साथ हिस्सेदारी की थी इसलिए उसमें कैलाश को कैलाश ने के.सी. जैन और व्यास को क्लीन चिट अन्यथा प्राप्त अपुष्ट समाचारों के अनुसार दोनों का निलंबन तय था। सारे बच गए, मां की झूठी कसम खाकर सारे बच गये रे..... सारे गंदगी खाने वाले सारे बच गए।

लोक निर्माण विभाग में सिंहस्थ में किए भ्रष्टाचार का प्रभारी हरामखोर मुख्य अभियंता सोनगरा और उसकी गैंग के कारनामों जिसमें उज्जैन नगर और उसके चारों तरफ की सड़कोंजिसमें 182 कि.मी. सड़क प्रभारी तिरोले, भ्रष्ट का अभियंता एन.के. श्री माली, जिसमें श्वान बाय ने शासन में रहकर महाकाल मंदिर में तो बेटे ने सलाहकार बनकर बाहर रहकर भी करोड़ों रुपए का भ्रष्टाचार किया। कार्यपालन अभियंता यांत्रिकीय और वैद्युतकीय सबने मिलकर सोनगरा के संरक्षण में करोड़ों का भ्रष्टाचार हुआ चूंकि सिंहस्थ प्रभारी भी वही मां की सौगंध खाने वाला कैलाश ही था। स्वाभाविक था सड़कें तो उसने बनाई नहीं थीं सीधा सारा पैसा बैंकों में, जमीनें, मकान, होटलों, रेस्टोरेंट खरीदने में लगाया गया। मां की सौगंध उसने सने तो एक पैसा नहीं छुआ, अरबों रुपए की कमाई को छूने की जरूरत नहं पड़ती, फिर पूरे म.प्र. में लगभग 100 कार्यपालन और 200 से ज्यादा सहा. अभियंता से हिस्सेदारी के लिए घूमता रहेगा क्या यही है भ्रष्टाचार निर्माण मंत्री का स्तर, घोटाले तो पूरे म.प्र. में हुए, जांच जारी है और जारी ही रहेगी अगले चुनावों तक।

उपरोक्त कांडों को तो मुख्यमंत्री और भ्रष्टाचार निर्माण मंत्री ने देखा है तब वहां की शूकरों की गैंग का कुछ नहीं हुआ तो फिर धार के मारावी, झाबुआ के भील के भ्रष्टाचार की परतें तो दबी ही रहेंगी जबकि इन हरामखोरों ने लगभग रु. 1 अरब से ज्यादा का भ्रष्टाचार किया और शान से लीपापोती कर रहे हैं।

भारत के नियंत्रक मालेखा परीक्षक की लोक निर्माण विभाग की भ्रष्टाचार और आंकड़ों की बाजीगरी का प्रतिवेदन क्या कहता है जो विधानसभा में सन 2003 की जून 2004 में प्रस्तुत की गई थी। पृष्ठ क्र. 151 पर प्रस्तुत की जा रही है। पाठकों को आंकड़ों के खेल से समझ आएगा सी.ए.जी. की सीमा और औपचारिकताओं पूर्ण शासकीय कृत्य जो कुले में होता तो है, परन्तु पकड़ में नहीं आता तो अंकेक्षण का क्या मतलब।

4.4 विशिष्ट व्यक्तियों के प्रतिकूल निष्पादित कार्य की मदों पर अतिरिक्त व्यय

बिटुमिनस इमल्शन के स्थान पर पेविंग बिटुमिन का उपयोग कर टैंक कोट का निष्पादन विशिष्टयों के विपरीत था, इसके अतिरिक्त 4 कार्यों पर 26.48 लाख रुपए की अतिरिक्त लागत आई।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (स.प.एवं रा. मंत्रालय) की विशिष्टियों में टैंक कोट में पेविंग बिटुमिन का उपयोग 1995 से बंद करते हुए डामरीकृत तथा ग्रेनेलर सड़क सतहों पर क्रमश: 2.5 कि.ग्रा. प्रति 10 वर्ग मीटर की दर से बिटुमिनस इमल्शन के उपयोग का प्रावधान था। इसके होते हुए भी प्रमुख अभियंता द्वारा जारी दर-अनुसूची (द.अ.-2000) में 5 कि.ग्रा. से 10 कि.ग्रा. प्रति 10 वर्गमीटर की दर से पेविंग बिटुमिन का उपयोग कर टैक-कोट करने की मद पुन: प्रवर्तित की गई।

कार्यपालन यंत्री लो.नि.वि. संभाग रायसेन द्वारा जिले की 87.06 कि.मी. सड़कों के सुदृढ़ीकरण/चौड़ीकरण के लिए 2001-02 के दौरान दर अनुसूची से 4.01 से 7.20 प्रतिशत कम पर दिए गए चार प्रतिशत दर ठेकों की संवीक्षा से प्रकट हुआ कि टैक-कोट इमल्शन केलिए भुगतान योग्य 4 रुपए से 7 रपए प्रति वर्ग मीटर के विरुद्ध 6.20 रुपए से 14.80 रुपए प्रति वर्ग मीटर की दर से भुगतान किया गया।

पेविग बिटुमेन का उपयोग कर टैक-कोट करने की मद का पुन: प्रवर्तन न केवल अधिक महंगा था वरन स.प.वं रा. मंत्रालय की विशिष्टियों के विपरीत भी था, जिसके परिणामस्वरूप 4 कार्यों पर 26.48 लाख रुपए की अतिरिक्त लागत आई।

इसे इंगित किए जाने पर (नवंर 2002) कार्यपालन यंत्री ने बताया कि कार्य अनुबंध के अनुसार निष्पादित किया गया। उत्तर स्वीकार्य नहीं था, क्योंकि अनुबंध किए गए प्रावधान विशिष्टियों के अनुरूप नहीं थे।

प्रकरण शासन को फरवरी 2003 में प्रतिवेदित किया गया, उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था (जनवरी 2004)।

(पेज 8 का शेष)

खान और सरस्वती नदी....

उपरोक्त वर्णित योजना का जो भी शिलान्यास करेगा स्वाभाविक है इंदौर नगर के इतिहास में अमर हो जाएगा। यदि इस योजना को इस वगठित परिषद ने लागू नहीं किया तो भी भविष्य की कालिख भी इसके हाथ ही आएगी फिर इस योजना का धन प्रदूषण मंडल, नदी जल आयोग के पास लंबित है। जिसका सदुपयोग किया ही जाना चाहिए, ताकि इस नगर के सौंदर्य से वर्तमान और भावी पीढ़ियां अभिभूत हो सकें।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल को बंद किया जाना चाहिए

भ्रष्ट लुटेरा ए.ए. मिश्रा 12 वर्ष से कुंडली मारे केवल वसूली में व्यस्त

सर्वोच्च न्यायालय ने 2-1-2000 में लेयर न लिखकर बनाम म.प्र. राज्य के मामले में निर्णय दिया था। भ्रष्ट प्रदूषण मंडल यदि अपने कार्यों को तरीके से अंजाम नहीं दे सकते तो बंद किया जाना चाहिए। उस समय भी भ्रष्ट मिश्रा के कारण ही पूरे देश के प्रदूषण मंडलों को समाप्त करने की बात कही गई थी।

धूर्त ए.ए. मिश्रा का स्थानांतरण छत्तीसगढ़ के बंटवारे में सन 2000 नव. में ही हो गया था, परन्तु ये लुटेरा लूटता है तो लुटाता भी है। सुंदरियों का शौकीन अपने हर अधिकारी की सेवा सुरा, सुंदरी और धन से करता है। इसी के कारण प्रदेश के इस महत्वपूर्ण विभाग का बंटवारा जून 04 तक नहीं हो सका था। अब जब बंटवारा हो गया है यह वहां के स्थानांतरण केलिए पिछले 4-5 वर्षों से लंबित खिला पिलाकर बच रहा है। दूसरी ओर इसके भ्रष्टाचार से जनता को प्रदूषण की समस्या से हर पल जूझना पड़ रहा है। अनेकों फैक्ट्रियां जिसमें ग्रेटन ग्लेन, मेटल मेन जैसी बिना आइ ाा और अनुज्ञप्ति के चल रही हैं। यह पैसा लेकर सोंठ मारे बैठा है।

इंदौर। इस महानगर में चलने वाले बड़े-बड़े उद्योगों के कारण चाय-पान की दुकानों की तरह प्रदूषण के लायसेंस बांटने वालों को कारण दिनों-दिन प्रदूषण की समस्या पैर पसारती जा रही है। ये विशुद्ध वसूली और रोमांस में व्यस्त हैं। इस हरामखोर मक्कार को तो केवल धन चाहिए और कार्यालय के साथ ही बाहरी महिलाओं से रोमांस में उलझे रहने वाले इस मक्कार को बढ़ती प्रदूषण की समस्या से कोई लेना-देना नहीं।

पूरा सांवेर रोड, पोलोग्राउण्ड, लक्ष्मी नगर, भागीरथपुरा की सैंकड़ों फैक्ट्रियां खुले में प्रदूषण फैला रही हैं। कई फैक्ट्रियों ने अभी तक वर्षों के बाद भी अनापत्ति पमाण पत्र भी नहीं लिये और न ही उनके पास इस विभाग का उद्योग चलाने की अनुज्ञप्ति है। इसके बाद भी वो धड़ल्ले से चल रही हैं। जिन्होंने अनुज्ञप्ति ले रखी है उनसे इसकी मासिक बंदी बंधी हुई है।

भोपाल में बैठा इस विभाग का अध्यक्ष पी.एस. दुबे, सचिव शुक्ला से जो निलंबित सेठी की जगह आया है, हरामखोर ब्राह्मणवाद निभा कर बच रहा है।

वन एवं पर्यावरण सचिव, मुख्य सचिव विजयसिंह और मुख्य मंत्री बाबूलाल गौर की भी इसकी धन देने लूटने और लुटाने की नीति के सामने औकात नहीं कि इसे वो हटा सकें। जबकि यदि केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण विभाग की अंकेक्षण टीम इस शहर का व शहर की फैक्ट्रियों का निरीक्षण करे तो इस शूकर के सैंकड़ों भ्रष्टाचार वसूली के किस्से सामने नजर आएंगे।

नगर के 250 नर्सिंग होम्स जो कचरा और प्रदूषण फैलाते हैं, जिनका दैनिक कचरा लगभग 25 टन से ज्यादा होता है। मात्र एक मारुति वेन जो कुल जमा में दिन भर में 4 चक्कर लगाती है, दो से ज्यादा नर्सिंग होम्स का कचरा नहीं ढो पाती, की आड़ में वहां हर वर्ष न्यूनतम रु. 5 हजार प्रतिमाह के औसत से डेढ़ करोड़ उन्हीं से डकार जाता है। 800 से ज्यादा उद्योग नारंगी श्रेणी में होने के बाद भी ये बंदा प्रदूषण नियंत्रण केलिए कोई भी प्रभावी दमदार कदम नहीं उठा सका। जबकि शहर में हर तीसरी व्यावसायिक इकाई प्रदूषण मंडल के दायरे में आती है। या तो वह वायु प्रदूषण में, जल प्रदूषण और फिर अधिकांश क्षेत्रों, स्त्रोतों को दूषित करने में लगी है। यह तो प्रदूषण मंडल की प्रयोगशाला में सहायक के पद पर नियुक्त महिला श्रीवास्तव सहायक को जब कार्यालय में रहेगा कार्यालय में बैठाएगा या यदि बाहर वसूली या निरीक्षण पर निकला तो साथ में मंडल की गाड़ी में बैठाकर अपने शौक पूरे करता घूमता रहता है। पूरे कार्यालय में इन दोनों की इन कारगुजारियों के चर्चे आम हैं। कार्यालयीन सूत्रों के अनुसार इस महिला के घर में भी इसके पति से जो वहीं वैज्ञानिक हैं, आए दिन झगड़े होते रहते हैं। वही हाल मिश्रा के घर पर भी है। यही कारण है कि ये हरामखोर अपने कामों कोंजाम देने की अपेक्षा विशुद्ध वसूली में लगा रहता है। लगभग 180 दाल मिलों से इसने दाहिमा, जो मंडी सचिव था, कांग्रेसी मंत्री ने मिलकर अनापत्ति प्रमाण पत्र और अनुज्ञप्ति के नाम पर लगभग रु. 3 करोड़ से ज्यादा वसूल कर डकार लिया था, जिसकी खबरें लगातार सांध्य दैनिकों में प्रकाशित होती रहीं। परन्तु इसका बाल भी बांका नहीं हुआ।

(शेष पेज 2 पर):

युद्ध में झोंके जा रहे बच्चे और अवयस्क

पूरे विश्व में चल रहे युद्धों में बच्चों और अवयस्कों को झोंका जा रहा है। काश्मीर के आतंकवादी युवा होते लड़कों की फौज अपहरण कर उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण देकर काश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों में झोंक रही है। वहीं दूसरी ओर आंध्रप्रदेश से लेकर उत्तरप्रदेश की सीमाओं तक फैले नक्सली भी बच्चों को जो 10-15 वर्ष के होते हैं और अवयस्कों में जो 15-18 वर्ष तक होते हैं। युद्ध का प्रशिक्षण देकर नक्सली गतिविधियों में शामिल कर अपनी गतिविधियों में शामिल करते हैं।

बच्चों को साहसिक बनाने का प्रयास सराहनीय लगता है, लेकिन उन्हें युद्ध के अंधे और क्रूर गलियारे में झोंकने की बात मानवीयता की लीक से हटती दिखती है, लेकिन विश्व के दस देश शायद ऐसी सोच नहीं रखते जो एक रिपोर्ट के मुताबिक बच्चों को लड़ाई के मोर्चों पर इस्तेमाल करते हैं। बाल सैनिकों पर लंदन में जारी हुई एक विस्तृत रिपोर्ट के मुताबिक कांगों, लोकतांत्रिक गणराज्य और म्यांमार सहित दस देश अग्रिम मोर्चों पर लड़ने के लिए बच्चों को इस्तेमाल कर रहे हैं।

रिपोर्ट में अमेरिका को भी यह कहते हुए कटघरे में खड़ा किया गया है कि अमेरिका सेना के अफगानिस्तान और इराक अभियान में 18 साल से कम उम्र के कम से कम 62 सैनिकों ने हिस्सा लिया। बाल सैनिकों पर रोक लगाने के लिए बने गठबंधन की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के तमाम क्षेत्रों में सशस्त्र राजनीतिक समूह बच्चों को भर्ती कर रहे हैं। उन्हें लड़ने के लिए मजबूर किया जाता है। विस्पोटक और हथियारों के इस्तेमाल का प्रशिक्षण दिया जाता है और बलात्कार, हिंसा, कठोर श्रम तथा शोषण के दूसरे तरीकों का शिकार बनाया जाता है।

18 वर्ष से कम आयु वाले लोगों को बच्चों की श्रेणी में रखने वाले

(शेष पेज 3 पर)

नारी महा-महत्वाकांक्षिणी

जया-नागिन का बदला-शंकराचार्य की गिरफ्तारी

नारी का स्वभाव है उसकी अति महत्वाकांक्षा। इतिहास साक्षी है, महाभारत में द्रोपदी पांच पतियों जो महाशूरवीर थे। उनको भोगने के उपरांत भी विशाल साम्राज्य की महारानी बनना। इसलिए इंद्रप्रस्थ की महारानी बनने पर भी उसे हस्तिनापुर की महारानी बनने का ख्वाब ही था जिसने महाभारत करवाया।

नारी अपनी कमनियता के बल पर दुनिया पर राज करने का सपना देखती है। फिर जो उसके रास्ते में आता है उसे वो अपनी अदाओं से बस में करती है। नहीं बस में ाता तो उसे हराने के लिए बाहों का हार से हराती है। फिर भी नहीं तो यौनाचार से, अंत में किसी भी हद तक गिर के उसका निकृष्टतम हथियार बलात्कार यदि उसमें नहीं फंसता वो फिर कोई भी आरोप चाहे हत्या का ही क्यों न हो फिर सामने शंकराचार्य ही क्यों न हो। फोर्स कर अपना बदला लेती है।

जया जो शंकराचार्य की वंदना करती थी, क्यों आरोप लगवाकर कारावास में पहुंचा दिया। स्वाभाविक है। काशी की राजकुमारी को भीष्म पितामह नहीं मिले तो शिखंडी वन मृत्यु का कारण ही बन गई भीष्म पितामह की। वही शंकराचार्य के साथ हुआ।

जया तो फिर नारी है, इस नारी में या नागिन में बदले की आग का ही परिणाम है। शंकराचार्य की गिरफ्तारी। नि:संदेह भाजपा को अच्छा अवसर अपनी हिन्दुवादी छवि को निखारने का मिल गया।

चेन्नई। जया का पुराना इतिहास और नारी की अति महत्वाकांक्षा, बदला लेने की आग, पृथ्वी पर हर नारी प्राणी चाहे फिर वह नागिन है, जया नारी स्वाभाविक प्रक्रिया का अंग है। इस क्रम में महाभ्रष्ट

रामचंद्रन की रखैल किसी वैश्या जया जिसे जिसे वहां की जनता ने मुख्यमंत्री बना दिया स्वाभाविक है ऐसी नीच औरत की मानसिकता कैसे किसी को अपने से ऊपर देख सकेगी। फिर त्रियाचरित्र इस नारी पर भ्रष्टाचारी आचरण के कितने प्रकरण थे। उसने साम, दाम, दंड, भेद के माध्यम से उच्च और सर्वोच्च न्यायालय में धन के सहारे सबको खरीदकर साफ बच निकली। नि:संदेह उस समय कीभाजपा सरकार ने उसे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से बच निकलने के लिए अपना पूरा सहयोग दिया, क्योंकि उसे सत्ता चलाने केलिए उसके और उसकी पार्टी के सांसदों की जरूरत थी।

जया और उसकी सहेली शशिकला ने मिलकर अपने दत्तक के लिए पुत्र चार्टर्ड एकाउंटेंड तक की झूठी रिपोर्ट लिखवा कर उसे उसकी बीवी तक की पिटाई तक पुलिस से करवाई। अब यदि शशिकला को कोई नर्सिंग होम खरीदना था उसे कांची कामकोटि के शंकराचार्य ने रु. 50 करोड़ में खरीद लिया। स्वाभाविक था उसकी सहेली और उसका अपमान हुआ। फिर वही जया भूतकाल में जिसकी वंदना करती थी हाथी दान में दिए जीतने पर, फिर 60 वर्ष से ऊपर धर्माचार्य की मनोवृत्ति उम्र के उत्तरार्थ में आकर इतनी विकृत हो गई कि उसकी हत्या करवा दी।

'समरथ को नहीं दोष गुंसाई' रामायण की यह चौपाई तुलसीदास ने इतिहास वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर ही लिखी होगी। उस समय वर्तमान में वह सत्ता में है। सत्ता हमेशा षड्यंत्रों का केन्द्र रहती आई है। फिर वह सत्ता और सत्ताधीश ही क्या जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए सत्ता का दुरुपयोग न करें। फिर जया जिसकी जिंदगी कलंकों से भरी पड़ी हो, इसके पूर्व में भी अनेकों अपनी नीच मानसिकता के परिचय दे चुकी हो, नागिन से बदन में लचकमक भले ही न बची हो, परन्तु मानस में नागिन जैसा बदला और बदले का विष तो अवश्य भरा हुआ है।

ये लोकतंत्र का अभिशाप ही है कि जनता भावावेश में आकर फिर स्वयं राजनीतिज्ञ धन बल का उपयोग कर लालू, बुश, जया, शिबू सोरेन, पप्पू यादव जैसे महा कमीने, महानीच, अपराधी सत्ताधीश हो जाते हैं।

चारों ओर भ्रष्टाचार

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

कर्मचारी राज्य बीमा निगम का मुख्यालय नंदानगर स्थत बीमा औषधालय के पीछे है। इसमें बैठे संचालक महाभ्रष्ट व्ही. के. अरोरा से लेकर अस्पताल में बैठे अधिकांश जाक्टर जिनके स्वयं के नर्सिंग होम्स चल रहे हैं, भी महाभ्रष्ट हैं, जो कर्मचारी और उनके परिवारों के हित इनसे जुड़े हुए हैं। साथ ही पूरे प्रदेश के बीमा निगम के औषधालयों में जो कटनी, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, भोपाल, सागर में चल रहे हैं, के औषधालयों में औषधियों, सामग्री के साथ-साथ डाक्टरों का भी अभाव ही रहता है। यदि बीमार, घायल कहीं बाहर इलाज करवा लें तो भी इन हरामखोरों को बिल स्वीकृत करने में भी पैसे चाहिए।

इंदौर। नंदा नगर स्थित मुख्यालय में बैठे भ्रष्ट व्ही.के. अरोरा से लेकर जो औषधियों की आपूर्ति से लेकर अन्य सभी सामग्री निम्न स्तर की औषधियां जिसमें केप्सूल, इंजेक्शन, वरल, गोलियां, एक्स-रे फिल्म, पैथालाजिकल, रसायन, चादरें व अन्य सैंकड़ों सामग्रियों की खरीद में मोटा कमीशन खाकर ही आपूर्ति करवाई जाती है। नि:संदेह अरोरा अकेला ही खाने वाला नहीं होता वरन ऊपर तक बैठी श्रमायुक्त, श्रम मंत्री, सचिव और प्रधान सचिव तक सारे हरामखोरों की फौज को चाटने को चाहिए। स्वाभाविक है अगर सब ही लूट में शामिल हैं तो कौन सा श्वान किस के ऊपर भौंकेगा या हड़काएगा, क्योंकि सभी के मुंह में टुकड़ा फंसा हुआ है।

म.प्र. भर में फैले 50 से ज्यादा अस्पतालों के डाक्टरों में भी लूट खसोट और भ्रष्टाचार फैला हुआ है। अधिकांश डाक्टर जो इन चिकित्सालयों में कार्यरत हैं। उनके स्वयं के हरामखोरी की कमाई से बनाए क्लिनिक चल रहे हैं। या वो मुश्किल से कुछ घंटे यहां बैठते हैं बाकी अपनी सेवाओं को दूसरे निजी नर्सिंग होम में बैठकर कमाई में लगे हैं। लूट-खसोट और वसूली का आलम ये है कि इन अस्पतालों में कार्यरत वाहनों की डीजल, पेट्रोल से लेकर रखरखाव और मरम्मत के बिलों, लेखन सामग्री तक की खरीदी में से भी चपरासी से लेकर बाबुओं और अधिकारीतक वसूली में जुटे हैं। अस्पतालों में बीमितों की चिकित्सा हो न हो इंदौर के चिकित्सालय अधीक्षक से लेकर पूरे प्रदेश के चिकित्सालयों के अधीक्षकों कीशूकरों की फौज बाहरी व्यक्तियों का दलालों के माध्यम से शल्य चिकित्सा करने और अन्य सुविधाओं को उपलब्ध करवाने के बदले भी मोटी रकम डकार जाते हैं।

इस मुख्यालय के बैठे अरोरा का सूचना का अधिकार अधिनियम 1998 के अंतर्गत सन 2000 से लेकर सन 2004 तक अनेकों पत्र, कुल प्राप्त धन उसके सदुपयोग कौन-कौन से डाक्टर कहां, कब से बैठे हैं, कहां कितना पैसा किस मद पर खर्च किया गया। कुल कितनी खरीद कैसे की गई जानने के लिए दिए गए परन्तु ये शूकरों कीफौज गंदगी चाटने में इतनी व्यस्त रहती है कि इसे ऐसे पत्रों का जवाब देने की अभी तक भी फुर्सत नहीं मिल सकी। जब बार -बार जवाब मांगने के लिए फोन किए गए तो अरोरा का कोई खास चेले ने फोन पर ही जवाब दिया कि रु. 200-500 ले देकर काम खत्म करो। कोई सूचना हमें देने का अधिकार नहीं है। साहब ने मना कर दिया है। आखिर सूचनाएं देंगे भी कैसे क्योंकि करोड़ों रुपए के घोटाले ये कर चुके हैं। इनका अगर स्टाक में रखी औषधियों, इंजेक्शन, केपसूल्स, गोलियों, सलाइन, सीरपस व अन्य सैंकड़ों का सत्यापन किया जाए तो 25 से 50 प्रतिशत समय बाधित औषधियों के साथ ही स्तरहीन औषधियों का अंबार मिलेगा।

अगले अंकों में पढ़िये अरोरा द्वारा बनवाया इंजीनरेटर जो पिछले 4 वर्षों से चालू नहीं हो सका क्योंकि अस्तरीय और अमानक तरीके का है। जैसे अनेकों सच्चाइयां.....

साप्ताहिक समय माया

खान और सरस्वती में नीर बहने लगे तो.....

इंदौर के सौंदर्य में और जनता में मस्ती बहने लगेगी

शुक्र है जनता ने इंदौर की काम करने वालों को पुनः इंदौर नगर औररुसकी जनता के भविष्य को संवारने का अवसर प्रदान किया। उमा शशि महिला महापौर होंगी। स्वाभाविक है नारी की कोमल भावना और सौंदर्य प्रधानता रहेगी। इंदौर नगर के मध्य से बहने वाली खान व सरस्वती नदियों के पाट को 40फिट तक चौड़ा करके 10-10 फिट दोनों तरफ हरियाली और बाग-बगीचे हो व मध्य के 20 फिट में लगभग 10 फिट स्वच्छ पानी का प्रवाह वर्ष भर स्थिर रहे, जिसमें छोटी नावें भी चलाई जा सकें, तो नगर के सौंदर्य में न केवल वृद्धि होगी वरन इंदौर की जनता के हृदय और मस्तिष्क में शीतलता और शांति का एहसास व्यवसाय में नित नये आयाम स्थापित करने में सहायक होगा, जिससे धन रोजगार और समृद्धि का विस्तार होगा जो प्रदेश और देश के लिए भी लाभकारी होगा।

इंदौर नगर निगम की जनता ने निगम के चुनावों में कार्य करने वालों को न केवल सराहा वरन उन्हें कार्य करने के लिए अगली 5 वर्षीय पारी खेलने का सुअवसर भी प्रदान किया। दूसरी तरफ भ्रष्टाचारियों के भ्रष्ट आचरण के कारण ही जीत किनारे पर लाकर ही दी।

उमा शशि एक नारी हैं। नारी के मन की कोमल भावनाएं और सौंदर्य प्रधान मस्तिष्क इंदौर के सौंदर्य और जनता के जीवन में समृद्धि विस्तार के नये आयाम स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा।

नवगठित परिषद और महापौर शासन के सहयोग ने भारत शासन की प्रदूषण मंडल को दी जाने वाली नदियों के स्वच्छता के लिए स्वीकृत करोड़ों रुपए की राशि का सदुपयोग न केवल नदियों की साफ-सफाई में वरन शहर के रहवासियों के उपयोग से निकले गंदे जल का समानान्तर जमीन के नीचे पाइप लाइन डालकर जल-मल की निकासी की व्यवस्था में भी किया जाना चाहिए, ताकि नदियों में शुद्ध शीतल जल का प्रवाहमान बना रहे, उसमें जलचर विकसित होते रह सकें।

यदि खान और सरस्वती नदियों को 40 फिट तक चौड़ा किया जाए और 10-10 फिट दोनों किनारों पर हरियाली और पूलदार वृक्षों को लगाकर बगीचों का निर्माण किया जाए 20 फिट चौड़ी नदियों में 10 फिट गहरा पानी वर्ष भर बहता रहे तो न केवल इंदौर के तापमान को नियंत्रित करने में सफल हो सकेंगे साथ ही प्रदूषण की कार्बन डाइआक्साइड का शोषण भी शहर के मध्य 20 फिट चौड़ी बाग-बगीचों की शृंखला कर सकेगी। जहां पक्षियों का कलरव जनता के मानसिक कष्टों को हरण करेगा, वहीं मस्तिष्क की शीतलता और सौंदर्य में वृद्धि करेगा।

खान और सरस्वती नदियों में वर्ष भर जल के प्रवाह की निरंतरता बनाए रखने के लिए नर्मदा के जल का प्रवाह चाहिए होगा जो इंदिरा सागर और नर्मदा सागर की नहरों से प्राप्त किया जा सकता है। नि:संदेह खर्च अरबों में होगा, परन्तु अगल एक शताब्दी तक इस शहर को शांति सौंदर्य और प्राणियों के जीवन में उस जल का प्रवाह बना रहेगा। जो इस नगर को व्यावसायिक श्रेष्ठता और सौंदर्य की प्रदेश की राजधानी बना देगा, जिससे इस व्यावसायिकता की मानसिकता वाली नगरी में धन और समृद्धि के प्रवाह में भी वृद्धि होगी।

इसके विपरीत दोनों ही नदियां जो वर्तमान में गंदगी और कीचड़ से सराबोर रहती हैं, इनकी तरफ अगर ध्यान नहीं दिया गया तो दोनों तरफ बढ़ते कब्जे इन सबके अतिरिक्त दृढ़ इच्छा शक्ति किसी भी काया पलट के लिए आवश्यक होती है, जो भाजपा में विद्यमान है। उसने नगर के चौराहों के साथ ही नगर की अनेकों सड़कों का सीमेंटीकरण करके काया पलट तो किया है जिसकी झलक जनता के चेहरे से भी पढ़ी जा सकती है।

(शेष पेज 6 पर)

सी.ए.जी. भी करता है आंकड़ों की बाजीगरी

अंकेक्षण के नाम पर करता कागजी खानापूर्ति, भ्रष्ट डकार जाते हैं अरबों रुपया

कंट्रोलर आडीटर जनरल ऑफ इंडिया अर्थात नियंत्रक महालेखाकार जो सीधे भारत के राष्ट्रपति के अधीन होता है, जिसका काम है केन्द्र व राज्य शासन के अधीन सभी विभागों, निगमों, मंडलों के लेखों का अंकेक्षण कार्य या महज खाना पूर्ति। यदि यह खानापूर्ति नहीं होती तो शासन के हजारों करोड़ भ्रष्ट मंत्री, संतरी, आई.ए.एस., आई.आर.एस., आई.आफ एस., आई.पी.एस. से लेकर विभागों के बड़े-छोटे बाबू से गांवों के सरपंचों और सचिवों तक नहीं पी जाते।

हर वर्ष सभी केन्द्रीय और देश के सभी राज्यों के सभी विभागों के अंकेक्षण होते हैं। इसके बाद भी अरबों के घोटाले इसीलिए पकड़ में नहीं आते क्योंकि इनके सभी अंकेक्षक भी भारी भ्रष्ट होते हैं। साथ ही वे केवल कागजी आंकड़ों की देखरेख करते हैं। न तो वो तकनीकी और न ही स्थल का अंकेक्षण करते हैं। यही कारण है कि केन्द्रीय और राज्यो के सभी विभागों में न केवल भारी धन की लूट पाट होने के बाद भी राष्ट्र की आजादी के 55 वर्ष बाद भी गरीब वहीं का वहीं और राजयोग भोग रहे उन्हीं गरीबों के नाम से करोड़पति और अरब पति बन देश में काले धन को बढ़ावा दे रहे हैं।

शासकीय कर्मचारियों के अतिरिक्त 90 प्रतिशत लोग सीएजी नाम की संस्था से परिचित ही नहीं होते हैं। जबकि देश की यह महत्वपूर्ण संस्था जो सीधे ही राष्ट्रपति के नियंत्रण में काम करती है। उस पर केन्द्र या राज्य शासन का सीधा कोई नियंत्रण नहीं होता न ही वहां नेतागिरी या अफसर शाही चल पाती है। फिर क्या कारण है कि वह अरबों के भ्रष्टाचार आजादी के बाद से अभी तक 55 वर्षों में नहीं पकड़ पाती। जबकि वो यह संस्था पूरे देश के सभी केन्द्रीय और राज्य शासन के सभी विभागों, निगमों, निकायों, संस्थाओं के लेखों की बारीकी से जांच करती है। 55 वर्षों के आजाद भारत के इतिहास में सिके अंकेक्षणों और सघन जांच के बाद न तो कोई मुकदमा ही न्यायालय में पेश हुआ और न ही किसी को सजा, जबकि ललआ जैसा हजारों करोड़ पी गए। देश के सभी आई.ए.एस. अरबों पी जाते हैं। फिर भारतीय आगम सेवाओं, भारतीय रेल सेवाओं, भारतीय विदेश सेवा, भारतीय वन सेवा, भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों से लेकर भारत के सभी राज्यों की राज्य सेवाओं के अधिकारी गणों से लेकर सभी विभागों के बाबुओं और गांवों के सरपंचों और सचिवों तक अरबों रुपए शासन की योजनाओं के धन डकारने के अभ्यस्त हो चुके हैं। तो ये फिर सभी विभागों के लेखों की जांच में क्या करते हैं। ये सारे हरामकोर भी उन्हीं हिस्सेदारों के हिस्सों में से डकार कर महज खानापूर्ति कर हाथ पोंढकर उल्टी सीधी कागजी प्रश्नावली सौंप कर चल देते हैं।

जब इनके अंकेक्षक किसी भी विभाग में अकेक्षण पर जाते हैं तो इन्हें शहर भत्ता, यात्रा भत्ता, होटल आदि का सारा पैसा मिलता है, परन्तु वो सारा पैसों के झूठे बिल लगाकर डकार जाते हैं। जबकि इनकी आवभगत भोजन, पानी और ठहरने की व्यवस्था उसी विभाग के लोग भ्रष्टाचार के उसी धन से करते हैं, जिसकी उन्होंने लूट की होती है। आते समय भी उस विभाग के

(शेष पेज 6 पर)

प्रमोद महाजन ही है सबसे बड़ा कुकर्मी

जालसाज, कोष प्रबंधक, भाजपा को डुबोने वाला

भाजपा में प्रमोद महाजन वाजपेयी का मुं लगा सबसे बड़ा जालसाज सबसे ज्यादा संपत्ति का मालिक, महाराष्ट्र और पूरे देश के बड़े औद्योगिक घरों से वसूली करने वाला सबसे बड़ा चालबाज जिसे उमा भारती की लोकप्रियता बिल्कुल नहीं भाती। जब आडवाणी धरने पर थे शंकराचार्य की गिरफ्तारी के विरुद्ध तब इस हरामखोर धूर्त का दूर-दूर तक पता नहीं था। यही वो कुकर्मी था जिसने चुनाव मई में करवा दिए जबकि यदि वही चुनाव अक्टूबर-नवंबर में होते तो भाजपा पुन: सत्ता में होती। कांग्रेसियों की काला बाजारी जमाखोरी और परमिट राज की प्रणेता वसूली करने वाली महाभ्रष्ट जिसके चंगुल में देश फंस गया और पुन: गैस की कालाबाजारी में जनता फंसी हुई महसूस कर रही है। उमा भारती ने आडवाणी से बैठक में इसी चांडाल चौकड़ी के बारे में ही कहा था, चूंकि उसे के मस्तिष्क में राजनीति की वो चालें अपने धार्मिक स्वभाव के कारण जन्म नहीं ले पातीं जो राजनीति की बिसात को चाहिए। यही कारण था कि उसने इन चालों को स्पष्ट करने के बाद स्वयं ही निलंबन भी मांग लिया था।

भारतीय राजनीति के ये धुरंधर पुरोधा प्रमोद के सामने इसीलिए नतमस्तक रहते हैं क्योंकि वो पार्टी के लिए उसके शैशवकाल से वसूली करता है। अगर वो रु. 1000 करोड़ इकट्ठे करता है तो रु. 500 करोड़ पार्टी कोष में देता है। फिर अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। इसलिए उसकी हार बदतमीजी पार्टी को झेलनी पड़ती है।

नई दिल्ली। भाजपा वर्तमान में भी अपने अनुशासित पार्टी का श्रेय लिए हुए है जो मात्र इसलिए कि वह संघ जैसे अत्यधिक अनुशासित दल की आज्ञा और उसके निमत्रण में कार्य करती है। संघ की मूलधारणा वाले ही अधिकांश भाजपाई वर्तमान में उसके आधार स्तंभ हैं। जो उसकी दैनंदिनी से लेकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नीतियों तक का निर्धारण करते हैं। यही कारण था कि 6 वर्ष के केन्द्रीय शासन काल में विपक्ष में बैठे कांग्रेसियों को जनता की आवाज उठाने का कोई खास और ठोस अवसर नहीं मिला, क्योंकि संघ पूरे राज्य में गली, मोहल्लों से लेकर राष्ट्रीय क्षितिज पर भी संघ प्रमुख तक जनता और जनता की परेशानियों और आवाज पहुंचाते थे। प्रमोद महाजन की हर भ्रष्ट गतिविधियों वसूली, रिलायंस का पट्टे धारी खान बनकर वसूली और उसके पक्ष में दूर संचार नीति और वायरलेस लोकलूप में दिए गए विशेष लूटों को भी संघ ने वाजपेयी के सामने न केवल रखा वरन प्रमोद महाजन को समय-समय पर खदेड़ा भी जाता रहा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का ये मुंह लगा अच्छा वक्ता और सधी हुई भाषा का प्रयोग कर अपने कुकर्मों से बच निकलता था। ऐसा नहीं था कि इसके भ्रष्टाचार, वसूली, उल्टी सीधी रियायतें, कानून को तोड़ मरोड़ कर उपयोग करने की हर हरकत पर संघ तो पूरी निगाह रखता ही था, प्रधानमंत्री कार्यालय और आडवाणी भी सब जानते थे, परन्तु संकट के समय टाटा, बिरला,

(शेष पेज 6 पर)

म.प्र. भाजपा भी मतलब परस्त, मक्कारों का गिरोह

गौर निहायत बदतमीज और एहसान फरामोश

पाखंडी संन्यासिन भूतपूर्व म.प्र. की मुख्यमंत्री उमा भारती का निलंबन क्या हुआ कि जिस वर्तमान मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर को उसने सत्ता सौंपी थी। उस ने सत्ता का स्वाद चखते ही पलक झपकते ही अपनी गिरगिटिया औकात दिखानी शुरू कर दी। वही रंग इन्दौरी ग्वाले ने भी दिखाया, नि:संदेह इंदौरी ताई सुमित्रा महाजन ने अपनी गरिमा का परिचय दिया।

बुरा वक्त एक तो कहकर नहीं आता दूसरा बुरा वक्त सदैव ही बुरा नहीं होता, यह वही परीक्षा की घड़ी होती है, जहां अपने पराए की पहचान होती है। सन्यासिन यदि सचमुच थोड़े से संयम से काम ले अपनी छबि की श्रेष्ठता प्रस्तुत कर पहले से ज्यादा शक्ति पुंज बन उभर सकती है। क्योंकि लालकृष्ण ऐसे धुआंधार लाल को निकाल देगा, तो केवल कृष्ण रह जाएगा।

संन्यासिन उमा भारती अगर पाखंड करना बंद कर दे और संयम से कार्य लेकर मुंह खोले तो न केवल सप राजनीतिज्ञ बनी रहकर सत्ता का सुख भोग सकती हैं। बाबूलाल गौर उमा भारती को सौंपी गई ग-ी पर पसर कर भले ही उसके निलंबन पर खुश हो जाएं पर इस एहसान फरामोशी और धूर्तता का भुगतान किसी भी पल करना पड़ जाएगा, जिसकी आवाज भी नहीं आयेगी।

भोपाल म.प्र. का वर्तमान महाभ्रष्ट लालची सठियाया बूढ़ा कितना बत्तमीज, मुंहफट एहसान फरामोश प्रजाति का है। उमा के निलंबन के पश्चात इसके वक्तव्यों ने स्वयं ही सिद्ध कर दिया [redacted]

भारती के निलंबन पर दीवाली मनाकर मिठाइ बांटकर खुशी मना रहा था। जैसे इसके जीवन की पहली हार्दिक खुशी की प्राप्ति हुई हो। जीवन के उत्तरार्ध में एक तो मुख्यमंत्री पद वह भी सन्यासिन की कृपा से प्राप्त हुआ, जब तक वह दल में थी, इसे अंदेशा बना रहता था कि न जाने कब उसे हटाकर वह सत्ता पर बिराज जाएगी और ये पुन: आसमान से टपक कर छोटे से मंत्रीपद के खजूर पर आ गिरेंगे। इसके लिए उसके निलंबन का सुनते ही इसको लगा कि अब अगले चार वर्ष तक का कांटा साफ। उसकी ग-ी पक्की।

जबकि ऐसे वक्त पर भले ही दिल में खुशी के अनार फूट रहे थे। कम से कम दो वाक्य सहानभति के बोलने [redacted]

केवल अपनी एहसान फरामोशी की असली औकात दिखा गए वरनजनता के मस्तिष्क में पूरी भाजपा की छवि को भी बिगाड़ गए। स्वाभाविक है कि पूरे देश में और प्रदेश में इससे विपक्षियों को भारी फायदा ही होगा। आागामी नगर पालिकाओं, निगमों, पंचायतों, विधानसभा चुनावों में।जब ये हरामखोर, धूर्तों, मक्कारों की फौज अपने नेता के साथ गिरगिटिया रंग दिखा सकते हैं, तो जनता के साथ तो दिखाएंगे ही वादे करेंगे और भूला जाएंगे, येु नकी आंतरिक और बाह्य रक्त और त्वचा का गुण बन चुका है।

अब जब उमा भारती की भाजपा में वापसी की तैयारी चल रही है, तो इसी धूर्त बाबू ने फिर तारीफों के पुल बांधना शुरू कर दिए हैं, ताकि वापसी पर सत्ता की कुर्सी न हिलने लगे।

गजल

हालाते जिस्म, सूरते जां, और भी खराब,
चारों तरफ खराब, यहां और भी खराब।
नजरों में आ रहे हैं नजारे बहुत बुरे,
होठों में आ रही है जुबां और भी खराब।
पाबंद हो रही है रवायत में रोशनी,
चिमनी में गुट रहा है धुंआ और भी खराब।
मूरत संवारने में बिगड़ती चली गई,
पहले से हो गया है जहां और भी खराब।
रोशन हुए चिराग तो आंखें नहीं रहीं,
अंधों को रोशनी का गुमां और भी खराब।
आगे निकल गए हैं घिसटते हुए कदम,
राहों में रह गए हैं, निशां और भी खराब।
सोचा था उनके देश में महंगी है जिंदगी,
पर जिंदगी का भाव वहां और भी खराब।

-स्व. दुष्यंत त्यागी

स्वामित्वाधिकारी, प्र[redacted]र्ल्ड कम्यु. ए-72 आर.एस.एस. नगर, इन्दौर के लिए नवनीत प्रिन्टर्स जेल रोड, इंदौर द्वारा मुद्रित
कम्प्यूटराईजेशन एवं [redacted]मो.-98262-25266, जबलपुर प्रतिनिधि श्री भारतभूषण सकरगाय फोन-98932, 57357.